Registration Number : MPMUL/2011/38970

બાજ ખેડાવાળ દર્શન

जुलाई 2025

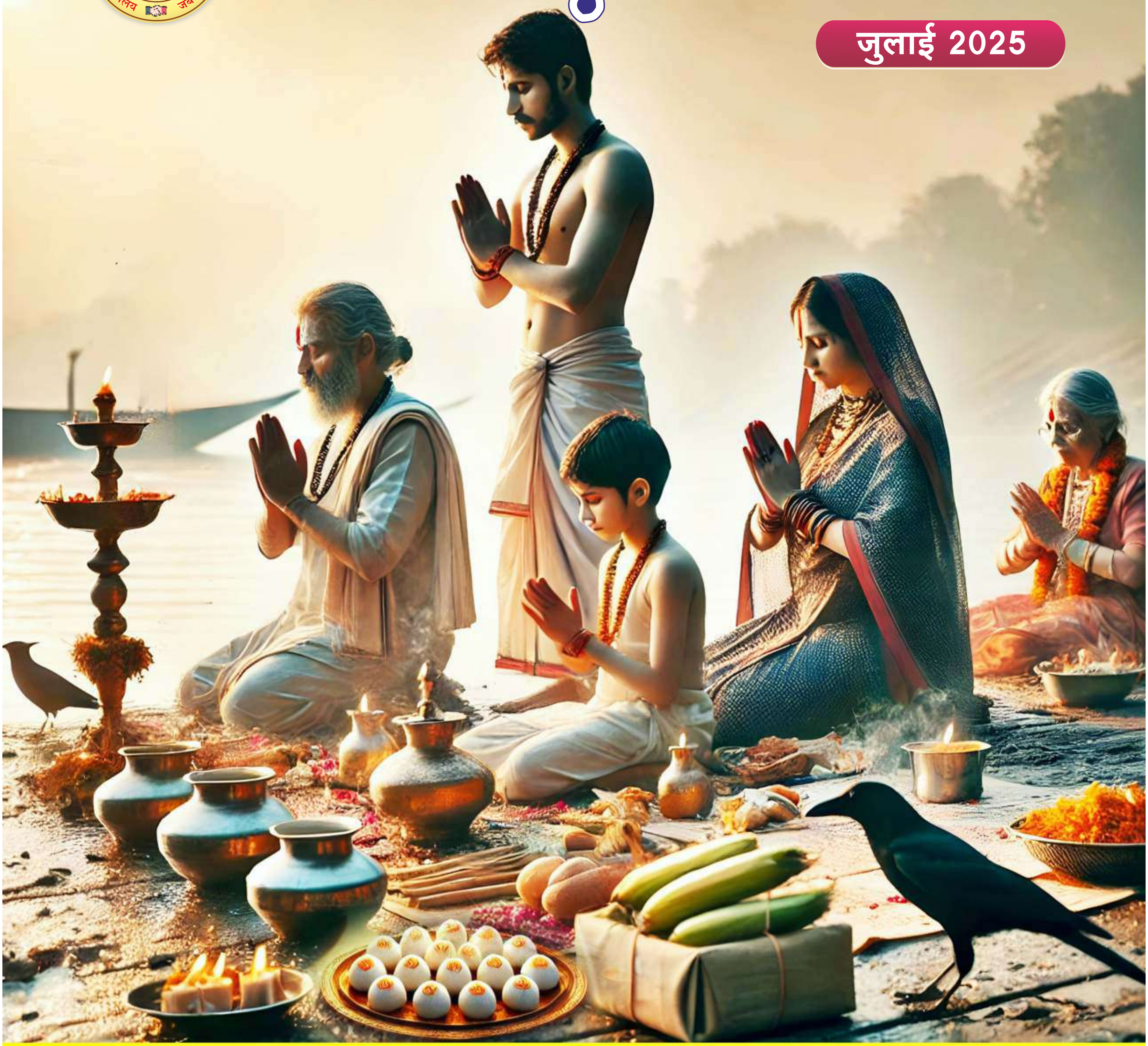

मध्य क्षेत्रीय गुजराती बाज खेड़ावाल समाज, मुख्यालय-जबलपुर, म.प्र.

बाज खेड़ावाल गुजराती भवन, 135 संगम कॉलोनी, बल्देवबाग, जबलपुर-482002
E-mail : mkgbksjbp@gmail.com Website : www.madhya-gujrati-baj-khedawal.org

शतायु अभिनंदन

श्रीमती विमला गुलाबशंकर शुक्ल

जन्म 1925, दमोह, वर्तमान निवास स्थान - नर्मदापुरम् (म.प्र.)

Registration Number - MPMUL/2011/38970

બાજ ખેડાવાળ દર્શન

Email : mkgbks@gmail.com

Website : www.madhya-gujrati-baj-khedawal.org

त्रैमासिक पत्रिका

जुलाई 2025

सम्पादक मण्डल

प्रधान सम्पादक

श्री अनिमेष प्रमोद शंकर पंड्या
जी 2-252, गुलमोहर कालोनी
भोपाल (म.प्र.)
मोबाइल नं. 9425373123
animeshpandya1@gmail.com

मुख्य सम्पादक

श्री सुधीर एन.एस. पंड्या
577, आनंद कालोनी,
बलदेवबाग, जबलपुर (म.प्र.)
मोबाइल नं. /वाट्सएप नं.
9826676077

सम्पादक

श्री श्रीकृष्ण बाबूलाल मेहता
3-शिवानी होम्स, ड्यूप्लेक्स
महानद्दा, मदन महल,
जबलपुर (म.प्र.)
मोबाइल नंबर : 7587523884
9329026894

श्री शैलेंद्र बी.के. धगट
जी-79, रामेश्वरम् कालोनी,
विजय नगर, जबलपुर (म.प्र.)
मोबाइल नंबर : 9201645420
Shailendra56192007@gmail.com

श्री हेमन्त ज्ञान शंकर दवे
616/1 बी, वसुन्धरा कालोनी
स्टेम फील्ड स्कूल के बाजू में
चेरीताल वार्ड, जबलपुर (म.प्र.)
मोबाइल नंबर : 9425044615
hemantdave1@rediffmail.com

प्रकाशन माह

जनवरी | जुलाई | अप्रैल | अक्टूबर

संपादकीय

''**बाज खेड़ावाल दर्शन**'' का यह अंक समाज के सेवाभावी दिवंगत सदस्यों को समर्पित है। अपने में ही सिमटने और स्वार्थपरक जीवन शैली के माहौल में सामाजिक कार्य करना सरल कार्य नहीं हैं। हम आभारी हैं स्वर्गीय आनंद शंकर जी पंड्या मुंबई, शंकर नाथ दवे, श्रीकृष्ण सेलट, अनिल सेलट भोपाल, प्रभा शंकर धगट दमोह, सुरेन्द्र नाथ त्रिवेदी वर्धा, नारायण शंकर पंड्या, रुद्र भाई मेहता, ज्ञान शंकर सेलट, करुणा शंकर पंड्या, हरिहर भट्ट, डॉ. रमेश शंकर शुक्ल जबलपुर, शशी प्रभा दवे सागर, मुरलीधर जोशी वाराणसी, जय शंकर सेलट, गौरी शंकर मेहता हटा, कृपा शंकर डनायक, बाल कृष्ण धगट सतना, डॉ. वेणी शंकर तिवारी नर्मदापुरम, अशोक दवे भिलाई, प्रकाश चंद दवे रायपुर जैसे अनेक पितृ पुरूषों के। जिनके कार्यों, प्रयासों तथा कर्त्तव्य भाव ने हमारे ''**बाज खेड़ावाल समाज**'' को संगठित स्वरुप प्रदान करने में अपना बहुमूल्य योगदान दिया।

मध्य क्षेत्रीय गुजराती बाज खेड़ावाल समाज ने सामाजिक एकात्मकता के लिए विभिन्न नगरों में निवासरत समाजजनों तथा कार्यरत स्थानीय संगठनों में समन्वय स्थापित किया। साथ ही उपलब्धि प्राप्त समाज के सदस्यों का सहयोग प्राप्त कर अनेक सामाजिक सेवा कार्यों को प्रारंभ किया। इन आदर्श प्रकल्पों में पत्रिका प्रकाशन, शिक्षा समिति के माध्यम से छात्रवृति/आर्थिक सहायता, प्रतिभावान विद्यार्थियों को प्रोत्साहन, वेबसाईट आदि कार्य हुए। इस तरह संगठन समाज की उन्नति के लिए प्रयासरत है। अभी तक जो उपलब्धियाँ स्थापित की गई हैं, वे सब हमारे दिवंगत सदस्यों, आपके-हमारे प्रयास व सहयोग से सम्भव हुई है। अस्तु 60 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के समाजजनों-सदस्यों से आग्रह है कि वे अपने परिवार के युवा वर्ग जो महानगरों-विदेशों में निवासरत होते जा रहे है उन्हें समाज-संगठन के विभिन्न प्रकल्पों से जुड़ने के लिए प्रेरित करें ताकि वे किये जा रहें कार्यों में जितना संभव हो, अपना सामाजिक दायित्व मानते हुए आर्थिक मदद करें। इस तरह वे संगठनात्मक कार्य कर रहे पदाधिकारियों का उत्साहवर्धन करेंगे। ताकि संगठन पितृ पुरूषों के दिखाये मार्ग-कार्यों को मूर्तरुप देते हुए अपनी सामाजिक पहचान को विस्तार देते रहें।

धन्यवाद

सुधीर पंड्या
मुख्य संपादक

शतायु अभिनंदन

श्रीमती विमला गुलाब शंकर शुक्ल
जन्म 1925 दमोह
वर्तमान निवास स्थान, नर्मदापुरम (म.प्र.)

सौ वर्ष का जीवन, और हर दिन एक सीख ।
ना शोर, ना दिखावा– बस शांति और भक्ति की राह ।।

शतायु जीवन किसी वरदान से कम नहीं होता, और यदि वह जीवन सेवा, भक्ति और प्रेरणा से भरा हो तो वह युगों तक स्मरणीय बन जाता है।

ऐसा ही एक दिव्य और आदर्शमयी जीवन जिया है हमारी पूज्य दादी माँ श्रीमती विमला गुलाब शुक्ल जी ने, जिनका जन्म 1925 में दमोह में हुआ और जो आज नर्मदापुरम में माँ नर्मदा के पावन नगर में रहती हैं, उनका जीवन एक सौम्य दीप की तरह है जो बिना आवाज के दूसरों का अंधेरा दूर करता रहा।

उनकी मुस्कान में आशीर्वाद हैं, उनके स्पर्श में दुआ है, और उनके जीवन में सच्ची पूजा की परिभाषा है। उनकी आध्यात्मिक आस्था भी उतनी ही गहरी रही है। वे माँ नर्मदा जी और श्री धूनीवाले दादाजी (खंडवा) की भक्त हैं और उनके प्रति उनका प्रेम और विश्वास जीवन भर शक्ति बना रहा।

उन्होंने समाज के बच्चों के लिए शिक्षा का मार्ग प्रशस्त किया, और इंसान को यही सिखाया–''अच्छे बनो, विनम्र बनो, और समाज के लिए उपयोगी बनो।''

उन्होंने समाज के बच्चों को शिक्षा में मदद के लिए छात्रवृत्तियाँ (Scholarships) भी प्रदान की, ताकि कोई बच्चा सिर्फ पैसों की कमी के कारण पढ़ाई से वंचित न रहे। उन्होंने हमेशा अपने परिवार और समाज के बच्चों को प्रेरित किया–''कि वे अच्छे कर्म करें,सच्चे बनें और समाज के लिए उपयोगी जीवन जिएँ।'' उन्होंने हमें सिखाया कि शिक्षा केवल ज्ञान नहीं, बल्कि सेवा का माध्यम भी है।

आज जब वे 100 वर्ष की हो चुकी हैं, तब भी उनका जीवन उनके विचार और आशीर्वाद हम सबके लिए प्रेरणा है। हम गर्व से कहते हैं कि हम श्रीमती विमला गुलाब शंकर शुक्ल जी के परिवार से हैं, ''जिन्होंने न केवल परिवार, बल्कि समाज को भी अपना समझा और सदा उसकी सेवा की। उनके स्नेह, संस्कार और विचारों की गूंज हमारे जीवन में हमेशा बनी रहेगी।''

हम सब उन्हें शत–शत नमन करते हैं।

समस्त शुक्ल परिवार – कोठी बाजार, नर्मदापुरम (म.प्र.)

" माँ "

आज सुबह उठते ही जब तुम्हारे बारे में सोचा,
तो बस तुम्हारी कठिन परिस्थितियों से
जूझने के ही किस्से याद आते रहे
बिन बोले हम सब की खुशियों का ध्यान किस तरह तुमने रखा
बस यही आभास होता रहा

किसी ने न तुम्हें तुम्हारी जिम्मेदारियों की सीख दी
ना दी कठिनाईयों से जुझने की हिम्मत
बस अपनी ही धुन में करती गई तुम काम
बिना किसी साथ और बिना किसी आराम

चट्टान से मजबूत तुम्हारे इरादे थे
पर मोम–सा पिघल जाने वाला दिल भी था
कितना ही लोग तुम्हें झुकाते रहे

पर तुममें भी लोहे जैसा न टूटने का साहस था
हम सब की खुशियों की खातिर
तुमने अपनी इच्छाओं को भुला दिया
हमारा भविष्य सुनहरा बनाने के लिए
तुमने अपना आज मिटा दिया

अब बस बहुत हुई यह लड़ाई माँ
अब मेरी बारी है तुम्हें वह सब कुछ देने की
सबके बारे में बहुत सोच लिया तुमने
अब मेरी बारी है तुम्हारी इच्छाओं को पूरा करने की

जिस भविष्य के लिए तुमने अपना सब कुछ खोया था
इस आज में तुम्हारे कल की खोई खुशियों
को फिर से मुझे संवारने दो
चलो आज जिम्मेदारियों का उलट बदल करते हैं
आज तुम मेरी बेटी और मैं तुम्हारी माँ बनते हैं....।

प्रेक्षा पंड्या पूना, महाराष्ट्र
सुपुत्री – अनूप पंड्या, भोपाल

मध्य क्षेत्रीय गुजराती बाज खेड़ावाल समाज (शिक्षा समिति) मुख्यालय-जबलपुर (म.प्र.)

छात्रवृत्ति/आर्थिक सहायता प्राप्त करने हेतु आवेदन संबंधी नियमावली - मार्गदर्शिका-2025-26

1. दानदाताओं द्वारा दी गई राशि के ब्याज से तथा इस बावत् प्राप्त राशि से छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है। अतः प्राथमिक तक 3 लाख रुपये (के आवेदन विशेष परिस्थिति में ही मान्य होंगे) मिडिल 4 लाख रुपये, हाईस्कूल/हायर सेकेण्डरी 5 लाख रुपये, स्नातक 6 लाख रुपये, स्नातकोत्तर 7 लाख रुपये, बी.ई., मेडीकल, एग्रीकल्चर 8 लाख रुपये से कम वार्षिक आय वाले परिवार ही आवेदन प्रेषित करें।
2. छात्रवृत्ति/आर्थिक सहायता हेतु आवेदन पत्र, केवल बाज खेड़ावाल दर्शन के इस अंक (जुलाई 2025), में छपे आवेदन फार्म में ही स्वीकार किये जायेंगे। सादे कागज या अन्य किसी प्रारूप वाले फार्म पर किये गये आवेदन निरस्त माने जावेंगे। इस अंक में छपे आवेदन पत्र की छाया प्रति का उपयोग भी किया जा सकता है।
3. आवेदन फार्म में चाही गई समस्त जानकारी सही एवं स्पष्ट अक्षरों में भरी जाना चाहिए एवं किसी भी बिन्दु पर चाही गई जानकारी का स्थान रिक्त न छोड़ा जाये। बैंक की जानकारी स्पष्ट लिखी जावे।
4. आवेदन पत्र में (प्रायमरी स्तर तक के छात्र/छात्राओं को छोड़कर) आवेदक द्वारा स्वयं भी हस्ताक्षर किये जाना चाहिये।
5. आवेदन पत्र में पिता/माता/पालक में से किसी एक के हस्ताक्षर भी आवश्यक हैं। उन्हें हस्ताक्षर यह सुनिश्चित/जाँच करने के उपरान्त ही करना चाहिए कि आवेदन–पत्र पूरी तरह से भरा गया है एवं आवेदन पत्र में दी गई जानकारी सही एवं संलग्न प्रमाण पत्र प्रामाणिक है।
6. उत्तीर्ण कक्षा से संबंधित मार्कशीट आवेदन के साथ संलग्न करना आवश्यक है। यदि आवेदन करते समय तक किसी आवेदक को मार्कशीट प्राप्त नहीं होती है तो भी छात्रवृत्ति हेतु आवेदन प्रेषित किया जा सकता है, किन्तु आवेदन पत्र में यह दर्शाना आवश्यक है कि मार्कशीट कब तक प्रेषित कर दी जावेगी। मार्कशीट की प्रति प्राप्त न होने की स्थिति में छात्रवृत्ति का भुगतान नहीं किया जावेगा।
7. आवेदक एवं उसके माता/पिता/पालक द्वारा आवेदन पत्र में सभी स्त्रोतों से प्राप्त आय सम्बन्धी जानकारी सही दर्शाई जाना चाहिए। सम्बन्धित आय प्रमाण पत्र, आवेदन पत्र के साथ संलग्न करना अनिवार्य है। आय सम्बन्धी अधूरी/गलत जानकारी देने एवं सभी आय प्रमाण पत्र संलग्न न करने की स्थिति में आवेदन निरस्त कर दिया जावेगा। प्रमाण पत्रों पर हस्ताक्षर कर स्वयं भी सत्यापित किया जाए। कम आय वाले विद्यार्थियों को अधिक सहयोग हो सके अतः उच्च आय वर्ग के लोग आवेदन करते समय इसका ध्यान रखें।
8. भोपाल, जबलपुर, सागर, दमोह, हटा, भिलाई, रायपुर, बिलासपुर, होशंगाबाद, बनारस, पूना, बैंगलुरू एवं सतना आदि में गुजराती बाज खेड़ावाल समाज के स्थानीय मंडल हैं। इन स्थानों के आवेदक अपना आवेदन मंडल की अनुशंसा कराकर ही शिक्षा समिति को भेजें। अन्य शहर के आवेदक मध्य क्षेत्रीय गुजराती बाज खेड़ावाल समाज, जबलपुर (म.प्र.) के किसी भी आजीवन सदस्य (सदस्यता क्रमांक के साथ) से अनुशंसा कराकर अपना आवेदन भेज सकते हैं।
9. जब कोई छात्र/छात्रा एक स्तर/कोर्स की पढ़ाई समाप्त कर, अगले स्तर/कोर्स की पढ़ाई हेतु किसी शिक्षण संस्था में प्रवेश लेता/लेती है, तो उसे इससे सम्बन्धित प्रमाण के तौर पर एडमिट कार्ड अथवा जमा की गई फीस की रसीद की छाया प्रति, आवेदन के साथ संलग्न करना आवश्यक है।
10. आर्थिक सहायता के निर्णय के समय क्रमशः विधवा, शारीरिक विकलांग, वृद्धावस्था का मापदंड रखा जावेगा। संगठन के पास राशि उपलब्ध होने पर ही बेरोजगार को सहायता दी जावेगी।
11. निर्धारित आवेदन पत्र पर पूर्ण विवरण भरकर अध्यक्ष शिक्षा समिति के पास दिनांक **30 सितम्बर 2025** तक आवश्यक रूप से प्रेषित करें। अंतिम तिथि के बाद प्राप्त आवेदन निरस्त माने जावेंगे।

    छात्रवृत्ति/आर्थिक सहायता आवेदन पत्र, डाक/कोरियर से, स्वयं या अन्य किसी के माध्यम से सीधे, अध्यक्ष को फार्म पर दर्शाये पते पर ही भेजें ।
12. किसी भी तरह की जानकारी के लिए अध्यक्ष/सचिव शिक्षा समिति से संपर्क करें। समिति का निर्णय सर्वमान्य होगा। समिति दानदाताओं के निर्देशों का पालन करते हुए अपने विवेकाधिकार से नियमानुसार निर्णय करेगी।

कन्दर्प त्रिवेदी (सचिव-शिक्षा समिति)
रामगोपाल वार्ड, हटा दमोह (म.प्र.)
मो. नं. 9752698096

प्रवीण पंड्या (अध्यक्ष-शिक्षा समिति)
श्यामा प्रसाद मुखर्जी नगर, दमोह (म.प्र.)
मो. नं. 94250-95903

मध्य क्षेत्रीय गुजराती बाज खेड़ावाल समाज, मुख्यालय - जबलपुर (म.प्र.)

आर्थिक सहायता हेतु आवेदन पत्र -2025

पासपोर्ट साईज फोटोग्राफ

1. आवेदक का नाम .... आयु ....
2. आवेदक की शैक्षणिक योग्यता ....
3. माता/पिता/पति का नाम ....
4. स्थायी पता ....
   .... मोबा.ः...
5. आवेदक का व्यवसाय/नौकरी/ पद/विभाग ....
6. वार्षिक आय नौकरी से रु. ....खेती से रु.......................मकान किराये से रु....................................
   कुल वार्षिक आय रु. ....(आय का प्रमाण पत्र संलग्न करें।)
7. परिवार के सदस्यों की जानकारी ः-

क्र.	नाम	उम्र	व्यवसाय/नौकरी न करने का कारण	वार्षिक आय

8. अन्य किसी संस्था से प्राप्त आर्थिक सहायता का विवरण ....
9. आप शासन के द्वारा आर्थिक आधार की किन सुविधाओं का लाभ लेते है- ....
   ....
10. आवेदक की वर्तमान आर्थिक स्थिति, कठिनाइयों सम्बंधी सप्रमाण विवरण आवेदन के पीछे पृष्ठ पर लिखें। परिवार के अन्य बालिग सदस्य की आय का विवरण/नौकरी/कार्य न करने का कारण स्पष्ट लिखें।
    ....
    दिनांक ....   आवेदक के हस्ताक्षर ....

स्थानीय मंडल की अनुशंसा - श्री /श्रीमती...शहर...................................

आवेदन के साथ संलग्न प्रमाण पत्रों और मेरी व्यक्तिगत जानकारी के आधार पर में इन्हें आर्थिक सहयोग दिए जाने की अनुशंसा करता/करती हूँ। आवेदक के परिवार में अन्य कोई आय का साधन नहीं हैं। संगठन के कार्यक्रमों में आपकी/परिवारजनों की उपस्थिति लगभग .... प्रतिशत रही है।

पूरा नाम ....

मो. नं. ....

हस्ताक्षर

दिनांक ....   पद-मुद्रा

मध्य क्षेत्रीय गुजराती बाज खेड़ावाल समाज मुख्यालय - जबलपुर (म.प्र.)

शिक्षा समिति द्वारा प्रदत्त समस्त छात्रवृत्तियों हेतु आवेदन पत्र-2025

पासपोर्ट साईज फोटोग्राफ

प्रति,

अध्यक्ष
मध्य क्षेत्रीय गुजराती बाज खेड़ावाल समाज
जी/2/252, गुलमोहर कालोनी, पो.ऑ. त्रिलंगा, भोपाल (म.प्र.)-462039

मैं मध्य क्षेत्रीय गुजराती बाज खेड़ावाल समाज जबलपुर (म.प्र.) द्वारा दी जा रही छात्रवृत्ति हेतु आवेदन कर रहा/रही हूँ। मैंने बाज खेड़ावाल दर्शन के जुलाई 2025 अंक में छपी मार्गदर्शिका को अच्छी तरह से पढ़ लिया है।

1. आवेदक का पूरा नाम ....जन्म तारीख ....
2. आवेदक के पिता का नाम ....
3. आवेदक की माता का नाम...
4. आवेदक का स्थाई पता ....
....पिन...........................
5. मोबाईल/ टेलीफोन नं. ....मो.व्हाट्सएप नं.......................................
6. अ- आपका परिवार स्वयं के या किराये के मकान में रहता है ....
ब- क्या आपके परिवार में स्वयं का चार चके वाला वाहन है ?...
स-आपके परिवार के अन्य बालिग बच्चे क्या कर रहे हैं ? ....
7. परिवार की सभी स्त्रोतों से वार्षिक आय - (आय प्रमाण पत्र वर्ष 2025 संलग्न करना अनिवार्य है)
(अ) नौकरी - पिता रु. .... विभाग/पद ....
माता रु. .... विभाग/पद ....
(ब) व्यवसाय रु. .... (स) खेती एकड़ ....आय रु..............................
(द) मकान किराया रु. .... कुल वार्षिक आय रु...
बैंक पासबुक, बैंक विवरण एवं मुख्य पेज की फोटो कापी एवं आय प्रमाण पत्र संलग्न करें।
8. आवेदक द्वारा पिछले दो वर्षों में उत्तीर्ण की गई परीक्षाओं का विवरण -
(यदि जानकारी अधिक हो तो अलग से संलग्न करें, साथ ही सभी अंक सूचियों की फोटोकापी भी संलग्न करें)

वर्ष	परीक्षा का विवरण	प्राप्तांक % / ग्रेड	शिक्षण संस्था का नाम / स्थान
2023 - 24			
2024 - 25			

9 . अध्यनरत कक्षा/ कोर्स का विवरण (वर्ष 2025- 26), जिस हेतु आवेदक छात्रवृत्ति चाहता है -

(एडमिट कार्ड/कोर्स कितने वर्ष का है ? जमा की गई फीस की रसीद की फोटो कापी आदि संलग्न करना आवश्यक है)

(अ) कक्षा/ कोर्स ....

(ब) शिक्षण संस्था का नाम ....

10 . विगत वर्ष प्राप्त छात्रवृत्ति का विवरण - कक्षा.......................... प्राप्त राशि रु. ....

11. अन्य संस्था/विद्या प्रचारिणी सभा दमोह से प्राप्त छात्रवृत्ति का विवरण -

(अ) संस्था का नाम ....

(ब) वर्ष 2024-25 में प्राप्त राशि रु. ....

(स) क्या इस वर्ष 2025-26 में भी इस छात्रवृत्ति हेतु आवेदन किया है - हाँ/ नहीं

12. क्या आवेदक के सगे भाईयों-बहिनों ने भी छात्रवृत्ति हेतु आवेदन दिया है, यदि हाँ तो विवरण दें -

(अ) नाम.. कक्षा ....

(ब) आवेदक के खाते का विवरण (स्पष्ट अंग्रेजी में केपीटल लेटर में)

खातेदार का नाम .... खाता संख्या ....

बैंक/ब्रांच का पूरा नाम /स्थान ....

आई.एफ.एस.सी. कोड ....

(बैंक पास बुक के मुख्य पृष्ठ जिसमें समस्त विवरण रहता है की फोटो कापी भी संलग्न करें)

हमारे द्वारा दी गई समस्त जानकारी सही है, हमने छात्रवृत्ति मार्गदर्शिका को ठीक से पढ़ लिया है। आवश्यक अंक सूची, प्रमाण पत्र, इस वर्ष का आय प्रमाण पत्र आदि संलग्न किये जा रहे हैं। मुझे शिक्षा समिति का निर्णय मान्य होगा ।

....

(पिता /माता या पालक के हस्ताक्षर) (आवेदक के हस्ताक्षर)

संलग्न प्रमाण पत्र :- (1) आय प्रमाण पत्र, (2) पिछले 2 वर्ष की मार्कशीट की फोटो कापी, (3) स्कूल/कॉलेज में प्रवेश का प्रमाण (4) बैंक खाते के विवरण हेतु पास बुक के मुख्य पृष्ठ की स्पष्ट फोटो कापी (5) अन्य.....

स्थानीय मंडल की अनुशंसा

आवेदक श्री/चि./कु. ....द्वारा फार्म पूरी तरह से भरा गया है,उल्लेखित समस्त जानकारियाँ और प्रमाण पत्र मेरी व्यक्तिगत जानकारी के आधार पर सही हैं। छात्रवृत्ति नियमावली अनुसार है। सामाजिक/संगठन के कार्यक्रमों में आपकी/परिवारजनों की उपस्थिति लगभग....प्रतिशत रही है। छात्रवृत्ति प्रदान करने की अनुशंसा की जाती है/नहीं की जाती है।

पूरा नाम..

मो. नं. ....

दिनांक .... हस्ताक्षर/ सील

मध्य क्षेत्रीय गुजराती बाज खेड़ावाल समाज शिक्षा समिति मुख्यालय-जबलपुर

'समाज' द्वारा प्रदत्त छात्रवृत्ति के परिपेक्ष्य में प्राप्त सहयोग

श्रीमती वृत्तिका पंड्या धगट जबलपुर (एम.टेक. डिजिटल कम्यूनिकेशन) सुपुत्री – श्रीमती वर्षा उमाकांत पंड्या, जबलपुर को वर्ष 2012 – 14 में 22000/– रुपये की कुल छात्रवृत्ति राशि 'समाज' द्वारा प्रदान की गई थी। इसके परिपेक्ष्य में आपने दिनांक 30/07/2025 को रुपये 22000/– की राशि 'समाज' की शिक्षा समिति फंड में सहयोग स्वरूप प्रदान की है । आप वर्तमान में 'सीनियर क्वॉलिटी ऐनालिस्ट रेडेंन इंटरऐक्टिव यू.एस.ए. (वर्कफ्राम होम जबलपुर) में कार्यरत हैं।

श्रीमती मेघा डणायक सरन, हैदराबाद बी.ई.(इलेक्ट्रानिक्स एंड इंस्ट्रामेंशन) सुपुत्री श्रीमती भारती – श्री संजय डणायक, भिलाई को वर्ष 2014 में रुपये 5000/– की कुल छात्रवृत्ति राशि 'समाज' द्वारा प्रदान की गई थी। इसके परिपेक्ष्य में आपने दिनांक 29/05/25 को रुपये 10,000/– की राशि सहयोग स्वरूप 'समाज' की शिक्षा समिति फंड में प्रदान की है। आप वर्तमान में साफ्ट वेयर कंपनी सी.जी.आई. हैदराबाद में बिजनेस एनालिस्ट के पद पर कार्यरत हैं।

श्रीमती नेहा डणायक फाल्के, भोपाल, एम.एस–सी (गणित), बी.एड., सुपुत्री श्रीमती भारती – श्री संजय डणायक, भिलाई, को वर्ष 2014 में रुपये 6000/– की कुल छात्रवृत्ति राशि 'समाज' द्वारा प्रदान की गई थी। इसके परिपेक्ष्य में आपने 29/05/25 को रुपये 7000/– की राशि सहयोग स्वरुप 'समाज' की शिक्षा समिति फंड में प्रदान की है। आप वर्तमान में सागर पब्लिक स्कूल भोपाल में शिक्षक (गणित) के पद पर कार्यरत हैं।

श्री प्रभव भट्ट बी.ई. (मेकेनिकल) सुपुत्र श्रीमती रेनू– श्री कपिल भट्ट, रायपुर को वर्ष 2002–04 में कुल छात्रवृति राशि रुपये 1500/– 'समाज' द्वारा प्रदान की गई थी। के परिपेक्ष्य में आपने 16–08–2025 को रुपये 20,000/– की राशि 'समजा' की शिक्षा समिति फंड में सहयोग स्वरुप प्रदान की है। आप वर्तमान में ऍडोब सिस्टम इंडिया, बंगुलुरु में प्रिंसिपल टेक आर्किटेक्चर के पद पर कार्यरत हैं।

गतांक से आगे

मध्य क्षेत्रीय गुजराती बाज खेड़ावाल समाज. मुख्यालय-जबलपुर

आजीवन सदस्यों की सूची

क्रमांक	आजीवन सदस्यों के नाम	शहर
1164	श्री सुदीप करूणा शंकर त्रिवेदी	सागर
1165	श्रीमती श्रुति सुदीप त्रिवेदी (संबद्ध–1164)	सागर
1166	श्रीमती आशीष राकेश पंड्या	भिलाई
1167	श्रीमती ऋचा आशीष पंड्या (संबद्ध–1166)	भिलाई
1168	श्री प्रबोध अरूण कुमार पंड्या	भोपाल
1169	श्रीमती अर्चना प्रबोध पंड्या (संबद्ध–1168)	भोपाल
1170	श्री सनी मनोहर दवे	जर्सी सिटी यू.एस.ए.
1171	श्रीमती अवनि सनी दवे (संबद्ध–1170)	जर्सी सिटी यू.एस.ए.
1172	श्री दिलीप प्राण शंकर धगट	जबलपुर
1173	श्रीमती रश्मि दिलीप धगट (संबद्ध–1172)	जबलपुर
1174	श्रीमती कविता शुक्ल	गुड़गाँव
1175	श्री विनीत शुक्ल (संबद्ध–1174)	गुड़गाँव
1176	डॉ. स्वस्ति सुनील धगट	गाधीनगर
1177	दीक्षा सुनील धगट	जबलपुर

विविध समाचार

विवाह सम्पन्न :–

- सौ. प्रेरणा सुपुत्री श्रीमती दीपा श्री सिद्धार्थ दवे रायगढ़ (छ.ग.) **संग** चि.विशी सुपुत्र श्रीमती अनीता–श्री राजीव कुमार मेहता बिलासपुर (छ.ग.) दिनांक 07.06.2025.

उपलब्धि :–

कु. संचारी दुबे नर्मदापुरम ने एम.एस.सी.बायो टेक्नोलॉजी विषय से फाईनल परीक्षा 90 **%** अंक प्राप्त कर उत्तीर्ण की। आप श्री संदीप दुबे एवं श्रीमती मोनिका दुबे उपाध्यक्ष गुजराती बाज खेड़ावाल ब्राह्मण समाज नर्मदापुरम की सुपुत्री हैं। बधाई एवं शुभकामनाएं।

पदोन्नति:-

श्री अनिरूद्ध सेलट नई दिल्ली, 01.01.2025 को आयकर निरीक्षक (INCOM TAX INSPECTOR) से आयकर अधिकारी (INCOM TAX OFFICER) पद पर पदौन्नत हुए। आप वर्तमान में वित्त मंत्रालय, आयकर विभाग, सी.बी.डी.टी.नार्थ ब्लॉक, नई दिल्ली में पोस्टेड हैं। आपने इंटरमिनिस्ट्री चैस टूर्नामेंट 2024 में वित्त मंत्रालय की ओर से खेलते हुए टीम इवेंट में गोल्ड मैडल प्राप्त किया था। आप सौ. सुनीता–श्री श्रीकृष्ण सेलट वाराणसी के सुपुत्र हैं। बधाई एवं शुभकामनाएँ

सेवानिवृति:-

श्री राजीव विश्वनाथ मेहता जबलपुर अपने 34 वर्ष के शासकीय सेवाकाल के उपरांत दिनांक 30 मई 2025 को सेवानिवृत हुए। आप मुख्य महाप्रबंधक कार्यालय (कमर्शियल कन्वेंशनल एनर्जी म.प्र.पॉवर मैनेजमेंट कंपनी लिमिटेड जबलपुर में सीनियर लॉ ऑफीसर के पद पर कार्यरत थे।

श्रीमती मीनल गोपाल कृष्ण मेहता जबलपुर, 31 मई 2025 को केन्द्रीय विद्यालय टी.एफ.आर.आई. बरेला रोड, जबलपुर से प्रशिक्षित स्नातक, कला शिक्षक पद से सेवानिवृत हुईं। आपने 26 वर्ष तक कला शिक्षक के रूप में स्कूल के छात्र–छात्राओं को रंगों की खूबसूरत दुनिया से अपनी कल्पनाओं को आकार देना सिखाया, उनमें कला प्रेम विकसित किया। आपके शिक्षण कौशल, कलात्मक प्रतिभा और सकारात्मक दृष्टिकोण ने विद्यार्थियों में नई सोच–दिशा प्रदान की। आपके मार्गदर्शन में सामाजिक विज्ञान प्रदर्शनी, एक भारत श्रेष्ठ भारत व अन्य कार्यक्रमों में विद्यालय को राष्ट्रीय स्तर पर स्थान मिला। 'समाज' आपके स्वस्थ सुखमय जीवन की कामना करता है।

सम्मान

26 जुलाई–कारगिल विजय दिवस पर केन्द्रीय संचार ब्यूरो (सी.बी.सी.) मेरा युवा भारत जबलपुर हितकारिणी महिला महाविद्यालय–नर्सिंग कॉलेज जबलपुर के संयुक्त तत्वाधान में नर्सिंग कॉलेज सभागार में आयोजित कार्यक्रम में बाज खेड़ावाल ब्राह्मण समाज जबलपुर के सम्मानीय सदस्य ब्रिगेडियर श्री विपिन त्रिवेदी (रिटायर्ड) को मुख्य अतिथि बनाकर विशेष सम्मान प्रदान किया गया। इस अवसर पर आपने अपने उद्‌बोधन में ऑपरेशन कारगिल विजय दिवस को राष्ट्रीय गर्व व सेना के वीर जवानों के शौर्य के अटूट संकल्प का प्रतीक बताया व युवाओं से सेना में शामिल होकर देश सेवा करने का आवाह्न किया। इस अवसर पर भाषण, चित्रकला, प्रश्नमंच आदि कार्यक्रम भी हुए। सभा को अनेक गणमान्य अथितियों ने भी संबोधित किया व विजेताओं को पुरस्कार बाटें गये।

पुरस्कार

कु. विधि पंड्या नें दिनांक 26 से 31 मई 2025 तक तमिलनाडू के नमक्कल में आयोजित राष्ट्रीय 25 वीं सब जूनियर चैंपियनशिप की ताइची जियान स्पर्धा में मध्यप्रदेश का प्रतिनिधित्व करते हुए 7.95 अंकों के साथ द्वितीय स्थान प्राप्त कर रजत पदक अर्जित किया। आप श्रीमती रश्मी–श्री प्रणय चैतन्य पंड्या जबलपुर की सुपुत्री हैं। बधाई एवं शुभकामनाएँ

प्रतिभा

26 मई 2025 को प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी ने सीमेन्स कंपनी दाहोद (गुजरात) द्वारा भारतीय रेल्वे के लिए निर्मित 9000 हार्स पॉवर लोकोमोटिव इंजन का लोकार्पण किया इंजन निर्माण परियोजना से जुड़ी इंजीनियरिंग टीम का नेतृत्व हमारे समाज के प्रतिभावान इंजीनियर श्री अंकित पंड्या द्वारा किया गया। यह बाहुबली इंजन 4600 टन वजनी डबल स्टैक कंटेनर मालगाड़ी को 120 किलोमीटर प्रति घंटे की स्पीड से चलाने में सक्षम है। यह देश का पहला सर्वसुविधा युक्त मेड इन दाहोद (भारत) लोकोमेटिव इंजन है। अंकित ने बरकतुल्लाह युनिवर्सिटी भोपाल से इंजीनियरिंग की पढ़ाई । आप वर्तमान में सीमेन्स कंपनी गुरुग्राम में तकनीकी परियोजना प्रबंधक पद पर कार्यरत हैं। आपने अपने अथक प्रयासों, परिश्रम व तकनीकी ज्ञान से यह विशेष उपलब्धि प्राप्त करते हुए हम सभी को गौरवान्वित किया है। आप बाज खेड़ावाल गुजराती समाज भोपाल के सदस्य सौ. वंदना–श्री अनूप पंड्या के सुपुत्र तथा जबलपुर निवासी सौ. विनिता – श्री विवेक मेहता के दामाद हैं। अंकित के नाम पर सीजी पॉवर मंडीदीप में 13 पेटेंट रजिस्टर्ड हैं। भारतीय इंजीनियरिंग की इस ऐतिहासिक सफलता एवं उसमें आपकी भूमिका के लिए 'समाज' की ओर से आपको बधाई एवं शुभकामनाएं.....

त्रैमासिक रिपोर्ट

गुजराती बाज खेड़ावाल समाज भिलाई -दुर्ग

दिनांक 31 जुलाई 2025 को गुजराती बाज खेड़ावाल समाज भिलाईं के समाज भवन 'गुजराती सेवा सदन' में आर्ट कॉम संस्था के सहयोग से वृक्षारोपण का आयोजन किया गया। समाज के सभी सदस्यों के सहयोग से कार्यक्रम सफल एवं प्रेरणादायी रहा । उपस्थित सभी सदस्यों ने वृक्षारोपण के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण की शपथ ली।

मयूर भट्ट 'सचिव'

गुजराती बाज खेड़ावाल ब्राह्मण समाज नर्मदापुरम

'समाज' की नर्मदापुरम इकाई ने विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून को नगर के फेफड़ताल स्थित खेत पर तथा 10 जुलाई को देवाभाई समाधि प्रांगण सदर बाजार में आम, ऑवला, बादाम, अशोक, एवं विल्वपत्र के पौधे रोपकर वृक्षारोपण किया। प्रकृति से प्रेम,धरती को हरियाली चादर उठाने के उद्देश्य को पूरा करने श्रीमती पुष्पा जोशी, श्रीमती मोनिका दुबे, श्रीमती स्वाति दुबे, सर्वश्री राजकुमार तिवारी (अध्यक्ष) सौरभ तिवारी, अशोक कुमार, बसंत एवं उमेश कुमार मालवीय, तथा श्याम परदेशी का अभिनंदनीय सहयोग रहा। सामाजिक मेल-मिलाप को बढ़ाने के लिए हमारे सामाजिक संगठन द्वारा हर मंगलवार को सायं 6 बजे नर्मदापुरम के विभिन्न क्षेत्रो में संगीतमय सुंदर कांड के पाठ का आयोजन प्रारंभ किया गया है। इसी तारतम्य में 22 जुलाई को राजा मोहल्ले में तथा 29 जुलाई को सुगम कुंज कॉलोनी में सुंदरकांड के पाठ का आयोजन हुआ। सर्व श्री राजकुमार तिवारी, सौरभ तिवारी, मंगला तिवारी, ज्योति तिवारी, अरविंद तिवारी, अशोक दुबे, नरेन्द्र दुबे, ओम प्रकाश तिवारी, रेवाशंकर तिवारी, वंश तिवारी, संजीव शर्मा, के.एन. त्रिपाठी, नीरज भट्ट , आशुतोष शर्मा, सहित अनेक क्षेत्रीय जनों की उपस्थिति एवं सहयोग ने इस भक्तिमय कार्यक्रम को भव्यता प्रदान की गई।

सामाजिक सौहार्द को बढ़ाने संगठन पदाधिकारियों ने समाज जनों के निवास पर जाकर भुजरिया/ कजलियों का आदान प्रदान किया, साथ ही आजादी का जश्न मनाने एवं 15 अगस्त को घरों पर तिरंगा फहराने राष्ट्रीय ध्वज का वितरण किया।

राजकुमार तिवारी '' अध्यक्ष''

उत्तर क्षेत्र बाज खेड़ावाल गुजराती समाज वाराणसी

उत्तर क्षेत्र बाजखेड़ावाल गुजराती समाज, वाराणसी ने अपने खेड़ावाल भवन में 79 वां स्वतंत्रता दिवस बड़े हर्षोल्लास से मनाया। इस अवसर पर ध्वजारोहण का कार्यक्रम संपन्न हुआ, जिसमें समाज के सभी सदस्यों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। इस अवसर पर अध्यक्ष और महामंत्री ने सभी सदस्यों का धन्यवाद देते हुए कहा कि समाज की एकता और सहयोग ही हमें आगे बढ़ने की ताकत देता है। उन्होंने समाज के सभी सदस्यों से आह्वान किया कि वे समाज को आगे ले जाने के लिए निरंतर प्रयासरत रहें और समाज की प्रगति में अपना योगदान दें।समाज के सभी सदस्यों ने इस अवसर पर संकल्प लिया कि वे समाज की उन्नति और एकता के लिए काम करते रहेंगे। इस समारोह ने समाज के सदस्यों में एक नई ऊर्जा और उत्साह का संचार किया।

आर्यन पंड्या (प्रचार मंत्री)

सामुदायिक भवन, गुजराती कालोनी भोपाल

79 वें स्वतंत्रता दिवस को गुजराती कालोनी, भोपाल के सामुदायिक भवन में वरिष्ठ रहवासी डॉ. अनूप दवे के द्वारा ध्वजारोहण कर मनाया गया । इस अवसर पर मध्य क्षेत्रीय संगठन के अध्यक्ष श्री अनिमेष पंड्या तथा स्थानीय संगठन के अध्यक्ष श्री सुबोध भाई भट्ट एवं गुजराती कालोनी के समस्त रहवासीगण उपस्थित रहे । स्वल्पाहार के मध्य श्री नितिन धगट के द्वारा मधुर संगीत की प्रस्तुति दी गई ।

दीपक धगट 'सचिव', गुजराती कॉलोनी, भोपाल

श्री अखिल भारतीय बाज खेड़ावाल हितवर्धक सभा अहमदाबाद (गुजरात)

36 वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन 28.12.2025 रविवार, स्थान-अंबा जी नगर (गुजरात)

श्री अखिल भारतीय बाज खेड़ावाल हितवर्धक सभा अहमदाबाद का 36 वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन दिनांक 28.12.2025 को गुजरात की प्रसिद्ध शक्तिपीठ श्री अंबाजी नगर(धाम) में आयोजित है। संस्था 'प्रमुख श्री' किरीट कुमार दवे (आणंद) ने सभी ज्ञातिजनों से कार्यक्रम में उपस्थिति का आग्रह किया हैं। कार्यक्रम में पहुंचने वाले सदस्यों को उनकी पूर्व सूचना पर उनके ठहरने खाने की व्यवस्था संस्था द्वारा की जा रही है। इस बाबत् श्री किरीट भाई दवे से उनके मोबाइल नंबर 9825189447 पर संपर्क कर और अधिक जानकारी प्राप्त की जा सकती है तथा अहमदाबाद से प्रकाशित होने वाली संस्था की मासिक पत्रिका **''बाजखेड़ावाल पत्रिका''** से भी आप जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

इस प्रसंग में भाग लेने वाले ज्ञातिजन (कुलदेवी) श्री क्षीर अंबा माता, खेड़ब्रह्मा सहित माउंट आबू व नजदीक के अनेक दर्शनीय स्थलों के यात्रा भ्रमण का कार्यक्रम बनाकर आनंद लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

सुधीर पंड्या 'सचिव' म.क्षे.गु.बा.खे. समाज,जबलपुर

युवा परिचय

Akshay Mehta

Education	-	B. Tech (Mathematics and Scientific Coumpting) From IIT Kanpur.
DesignationY	-	Business Analytics Manager Allen Digitan, Bengluru,
Annual Salary	-	42+ L.P.A
Birth, Time, Place	-	18/12/1995; 3.40 PM; /Jabalpur
Height	-	5'8"/ Fair
Father	-	Shri Anupam Mehta (Retired Works Manager M/s) Khemchand Flus But welding Plant Jharsuguda (Orisa)
Mother	-	Smt. Smriti Mehta (EX-U.D.T.) BBJ Girls H.Sc. School Digita Pangar Jabalpur
Grandfather	-	Lt. Shri Anand Shankar Mehta
Grandmother	-	Lt. Smt. Rajkumari Mehta, Varanasi
Phone	-	8463059118, 9617205345
Address	-	19, Shrichhaya, Tulsi Nagar, Cherital, Jabalpur

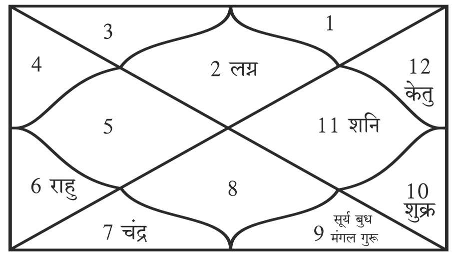

Gotra	: Jatukarn	**Varn.**	: Sudra	**Rashi**	: Tula
Nakshatra	: Swati	**Chran**	: Second	**Gan**	: Dev
Nadi	: Anntay	**Yoni**	: Mahi	**Swami**	: Sukra

युवा परिचय

यश धगट

शिक्षा	–	बी.टेक (आई.आई.टी.रुड़की)
व्यवसाय	–	Sprinkler Company, Gudgoan
जन्म दिनांक/समय/स्थान	–	12.01.1997 सुबह 11.40 बजे, सागर
रंग/कद	–	गोरा, 5’9’’
पिता	–	श्री संजय धगट
माता	–	श्रीमती अंजू धगट
दादा-दादी का नाम	–	स्व. श्री विनोद कामनाथ धगट-श्रीमती निर्मला धगट
नाना-नानी का नाम	–	स्व. श्री अविनाश भाई त्रिवेदी- श्रीमती दमयंती त्रिवेदी
पता	–	एन.103 श्रीकृष्ण हाई टक्स, कटारा हिल्स, भोपाल
मोबाइल नं.	–	7389765002,9926822967

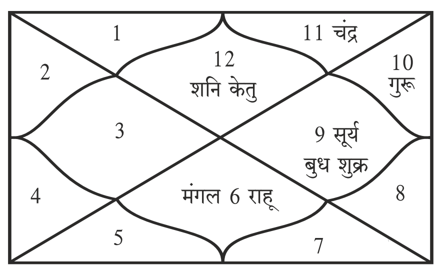

गोत्र – शालंकायन राशि – कुंभ नाड़ी – आदि गण – राक्षस योनी –अश्व

युवा परिचय

हरित सेलट

शिक्षा	–	बी.ई. (मेकाट्रॉनिक्स)
नौकरी /स्थान	–	जी.पी.पी. गाजियाबाद, उ.प्र. (NCR)
वार्षिक आय	–	8.4 लाख वार्षिक
जन्म दिनांक/समय/स्थान	–	19 मई, 1999/ 23. 47/इंदौर
ऊँचाई /रंग/ब्लडग्रुप	–	5'11'' / रंग साफ/ए+
पिता का नाम	–	श्री नीरज सेलट
माता का नाम	–	स्व. श्रीमती प्रीति सेलट
पता	–	पंतनगर वार्ड, सागर (म.प्र.)
मोबाइल नं.	–	+ 971 526458171, 7898581196
दादा-दादी का नाम	–	श्री प्रसन्न लाल सेलट एवं श्रीमती सुनीति सेलट
नाना-नानी का नाम	–	स्व. श्री प्रताप शंकर मेहता एवं श्रीमती साधना मेहता
कुण्डली मिलान	–	हाँ

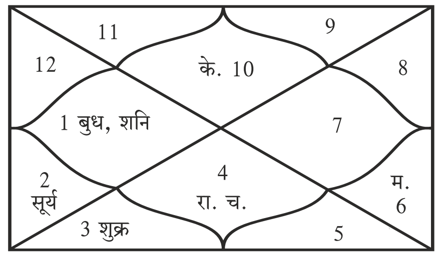

गोत्र	**–**	**उपमन्यु**	**चरण**	**–**	**चौथा**	**राशि स्वामी**	**–**	**चंद्र**	**योनि**	**–**	**मार्जा**	**नाड़ी**	**–**	**आध्य**
नक्षत्र	**–**	**पुर्नवसु**	**राशि**	**–**	**कर्क**	**वर्ण**	**–**	**विप्र**	**गण**	**–**	**देव**			

युवती परिचय

कु. दीपिका भट्ट

शिक्षा	–	एम.एस.सी. (केमिस्ट्री)
व्यवसाय	–	केमिस्ट (एस.ओ.पी.एल. मंडीदीप)
जन्म दिनांक/समय/स्थान	–	14/11/1999, रात्रि 1:02 बजे, शहडोल
रंग/वजन/कद/ब्लड ग्रुप	–	गोरा/ 4'11''/O+
पिता	–	श्री मुकेश कुमार भट्ट
माता	–	श्रीमती तनुजा भट्ट
दादा-दादी का नाम	–	स्व.श्री लक्ष्मीकांत भट्ट,/ स्व.श्रीमती विमला भट्ट
नाना-नानी का नाम	–	स्व. श्री रामकृष्ण दवे /स्व. श्रीमती कालिंदी दवे
पता	–	ई/303 इंद्रा नगर, मंडीदीप, भोपाल (म.प्र.)
मोबाइल नं.	–	9713029415
कुण्डली मिलान	–	उभय पक्ष की सहमति से
गोत्र	–	शांडिल्य

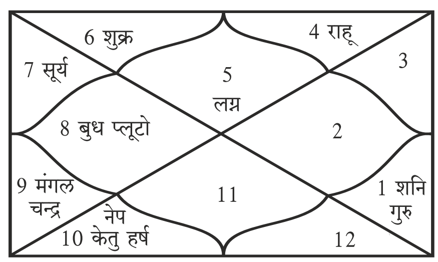

नक्षत्र	**–**	**उन्तराषाड़ा**	**राशि**	**–**	**धनु**	**नाड़ी**	**–**	**अन्तया**	**स्वामी**	**–**	**गुरू**
गण	**–**	**मनुष्य**	**चरण**	**–**	**प्रथम**	**योनि**	**–**	**मुंगुस**	**वर्ण**	**–**	**क्षत्रिय**

ऐतिहासिक धरोहर

उमरेठ ग्राम में स्थित बाज खेड़ावाल समाज का ऐतिहासिक तीर्थ - माँ वाराही एवं अम्बिका माता जी का मंदिर

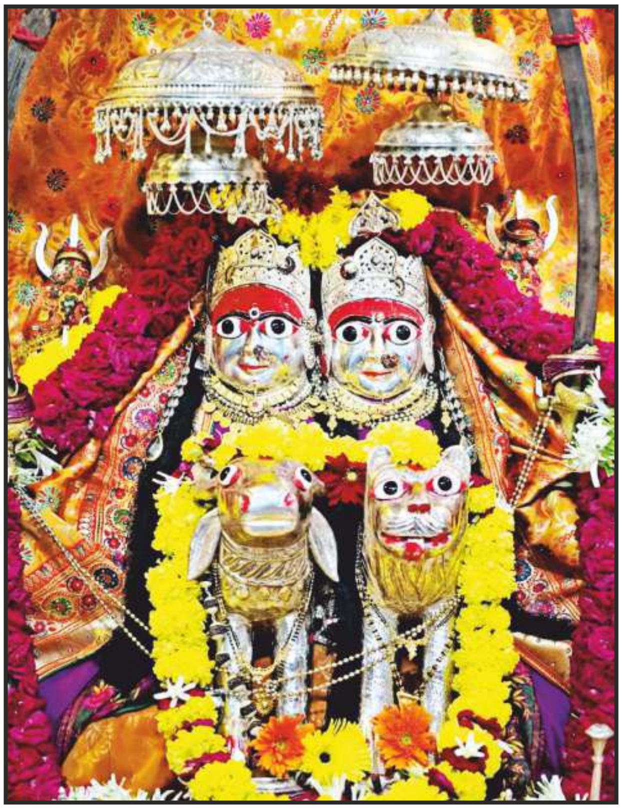

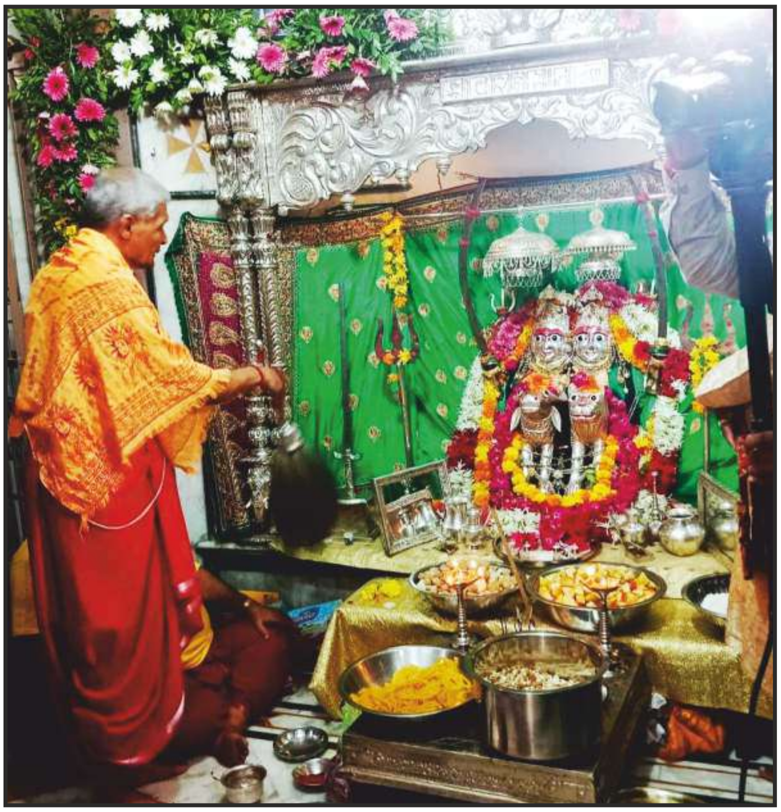

उमरेठ नगर (गुजरात) में लगभग 300 वर्ष प्राचीन बाराही माता का प्रसिद्ध मंदिर है, लाल दरवाजे के पास इस स्थान को वाराही चक्ले के नाम से जाना जाता है। यहाँ एक समय बड़ी संख्या में सूर्यवीर बाज खेड़ावाल ब्राह्मणों का निवास था। ऐतिहासिक लेख बताते हैं कि माता जी की ये मूर्तियाँ एक कुऐं की खुदाई में प्राप्त हुई थीं। यह कुआँ वाराही चुंगी नाके के सामने, राम तालाब पर, जलाराम मंदिर एवं अमरेश्वर मंदिर के पास, श्री मंगलेश्वर महादेव के सामने चौगान में, नडियाद-डाकोर-गोधरा-दाहोद हाईवे सड़क के पास है। यह भोलवा कुआँ कहलाता है। विक्रम संवत 1810 (सन्1754) में भोल ठाकर भूघर जी गोपाल जी द्वारा यह कुआँ जन हितार्थ राहगीरों के पेय जल व्यवस्था के निमित्त उस समय खुदवाया गया था। कथा है कि इस कुऐं की खुदाई के समय एक ही शिला पर निर्मित भैंसे पर आरूढ़ वाराही माता व सिंह पर आरूढ़ अंबिका माता के साथ संयुक्त रूप में यह मूर्ति मिली थी तब मूर्ति के साथ गाय का दूध दुहते हुए एक बीते की लम्बाई (साईज) का एक जीवित आदमी भी था जिसको कुऐं से बाहर लाने पर उसकी मृत्यु हो गई, जिसका ग्राम वासियों ने अग्नि संस्कार मंगलेश्वर महादेव मंदिर के पास शमीवृक्ष के नजदीक किया। उस स्थान को शुद्ध करके एक चबूतरा निर्मित कर उस पर एक तुलसी का पौधा लगाया गया था जो आज भी मौजूद है। कुऐं से निकली इस मूर्ति की स्थापना 1764 में बस्ती के मंदिर में महासुद नवमीं के दिन उमरेठ के बाज खेड़ावाल ब्राह्मणों के सहयोग से सेलट नथ्थू जी मुरली दास ने करवाई थी। उस समय यहाँ पेशवाओं का राज्य था। मंदिर के आसपास अनेक देवी एवं शिव मंदिर स्थित हैं। तब से (लगभग 300 वर्ष) आज तक मंदिर में माता जी का पूजन-अर्चन व जिस स्थान पर मूर्ति प्राप्त हुई थी (महादेव मंदिर के

चौगान में) आसोसुद नवमीं की पूरी रात 19 पाठ (कवच) का ऐतिहासिक हवन आयोजित होता है। दुर्गा सप्तशती के 13 पाठ, छः अंग-देवी कवच, अर्गला स्त्रोत, कीलक एवं तीन रहस्य सहित 19 कवचो का हवन होता हैं। बताते हैं कि इसमें लगभग 200 मन लकड़ी (40 किलो=एक मन) 50 किलो चावल, 100 किलो तिल, 50 किलो शुद्ध घी, 1000 नारियल व अन्य पूजन सामग्री का उपयोग (आहूती) किया जाता है। महादेव मंदिर के चौगान के मध्य खुले स्थान पर लगभग 10×10 फिट की लम्बाई चौड़ाई के स्थान को गाय के गोबर-मिट्टी से लीपकर स्थान तैयार किया जाता है उस पर बड़ी मोटी लकड़ियों को जमाकर हवन वेदिका बनाई जाती है। वाराही माता के मंदिर में आसोसुद नवरात्र के दिनों में विशेष पूजन अर्चन व मंदिर के समक्ष रात्रि में गरबे का आयोजन किया जाता है। नवमीं के दिन तीन पहरों-सुबह दस बजे फिर शाम सात बजे, रात्रि दस बजे विशेष पूजन अनुष्ठान होता है तथा माता जिस स्थान पर प्रगट हुईं थी वहाँ रात्रि 10-11 बजे से हवन प्रारंभ होता है। जो दूसरे दिन (दशहरे) की सुबह छः बजे तक चलता है। तत्पश्चात सभी उपस्थित जन वाराही माता मंदिर आकर आरती -गरबा करते हैं। इस तरह हवन कार्यक्रम की समाप्ति होती है। हवन में केवल बाज खेड़ावाल ब्राह्मण ही बैठते (जजमान) हैं। मुख्य जजमान के अतिरिक्त कुछ गोत्र विशेष के प्रतिनिधि (पाटले) भी हवन कुण्ड के पास अलग-अलग स्थान पर बैठकर जौ, दूध, घी, जल आदि विभिन्न तरह से हवन में आहूति देते हैं। स्व. श्री चंद्रकांत दवे (नडियाद) के भतीजे आचार्य दवे स्नेहिल उमाकांत भाई व उनके शिष्यों द्वारा आहूति के लिए जब मंत्रो का जब एक स्वर में उच्चारण किया जाता है तब देवी आभा की बारिश हो रही हो, ऐसा मंत्रमुग्ध करने वाला वातावरण इस स्थान पर निर्मित होता है। कुछ लोगों को तो हवन कुण्ड से ऊँची उठती लौ में माता के स्वरूप का दर्शन होता है। इस हवन में जजमान बनने (बैठने) की इच्छा रखने वाले को 25 से 30 वर्ष नामांकित होकर इंतजार करना पड़ता है तब उसे या परिवार को यह अवसर प्राप्त होता है। वाराही माता के इस हवन के दर्शनार्थ दूर नगर, प्रदेशों सहित देश विदेशों से बाज खेड़ावाल ब्राह्मणजन बड़ी संख्या में एकत्रित होते हैं। यज्ञ स्थल के आस-पास बड़े क्षेत्र में मेले (उत्सव) जैसा माहौल रहता है। अनेकजन पूरी रात बैठकर (जागकर) हर अध्याय की पूर्णता पर मोटे काले धागे में गांठ बनाकर स्वयं मंत्रित करते हुए एक गण्डा बनाते है, जिसे हाथ-गले में पहना जाता है। मान्यता है कि इस मंत्रित धागे (गण्डे) को पहनने से व्यक्ति को वर्षभर सुख-समृद्धि व निरोगता प्राप्त होती है।

वड़ौदरा-अहमदाबाद के रेल्वे रूट पर आणंद स्टेशन पर उतरकर सड़क मार्ग पर लगभग 60 किलोमीटर की दूरी पर उमरेठ नगर है। एक रेल लाईन आणंद-दाहोद भी है, जिसके मध्य उमरेठ रेल्वे स्टेशन पड़ता है। उमरेठ से डाकौर जी (भगवान श्री कृष्ण जी का प्रसिद्ध स्थान) की दूरी 15 किलोमीटर है। उमरेठ के आसपास अनेक दर्शनीय स्थल हैं। उमरेठ में ठहरने के लिए होटल, आश्रम में कमरे तथा अनेक ज्ञाति धर्मशालाएँ हैं।

विभिन्न स्त्रोतों से प्राप्त जानकारी के आधार पर आवश्यक जानकारी युक्त आलेख -लेखन, सुधीर पंड्या (मुख्य संपादक)

महालय श्राद्ध

चातुर्मास के प्रारंभ में एक मास-सावनमास शंकर जी की उपासना तथा श्री कृष्ण जन्माष्टमी होती है। फिर गणेश जी के दस दिन अनन्त चतुर्थी से चर्तुदशी तक गणपति पूजन उसके बाद 15 पितृ तर्पण के दिन आते हैं अर्थात् प्रतिपदा से सर्वपितृ अमावस्या तक पूर्वजों के लिए श्राद्ध तर्पण किया जाता है। फिर देवी नवरात्र आती हैं उनकी नौ दिन हम पूजन -आराधना करते हैं। उसके बाद शरद पूर्णिमा से लेकर कार्तिक मास में सूर्योदय से पहले स्नान दान करने का विधान है और अमावस्या के दिन दीपावली मनाते हैं। इस तरह पूरे (सम्पूर्ण) चातुर्मास में देव आराधना की जाती है।

जिस तरह हम शिवजी गणेश जी कुल देवता सहित देवी अराधना करते हैं उसी तरह पितृ पक्ष में जो कि भाद्रपक्ष मास के कृष्ण पक्ष प्रतिपदा से लेकर सर्वपितृ अमावस्या तक रहता है, इसको महालय श्राद्ध कहते हैं! इसमें अपने पितृ निमित्त श्रद्धाभाव रखते हुए तर्पण श्राद्ध -पिण्डदान करने का शास्त्रोक्त विधान है। जिन व्यक्तियों के पितृों की जो तिथी हो उस एक तिथी को पकड़कर (से लेकर) अपने सभी पितृों का तर्पण श्राद्ध व पिण्डदान श्राद्धाधिक कर्म करना चाहिए। इससे हमें मन की शांति सुख समृद्धि तथा पितृों का आर्शीवाद प्राप्त होता है। इस कर्म के करने से पितृदोषादि योगों से मुक्ति मिलती है, तथा पितृ दोष होने पर भी दोष उतना प्रभावशील नहीं रहता और हमारे किसी भी प्रकार के नुकसान या कार्यो में बाधा उत्पन्न नहीं होती। किसी जानकार पंडित से ही श्राद्धकर्म पूजन कराना चाहिए, इससे श्राद्ध कर्म करने वाले व्यक्ति को किसी भी प्रकार की गल्ती होने का दोष नहीं लगता है।

आप महालय श्राद्ध को अपने घर के पवित्र स्थान पर कर सकते हैं, घर पर व्यवस्था ना होने पर ही नदी (बहते पानी) जहाँ घाट स्थित हो वहाँ पर श्राद्ध कर्म करना उचित माना गया है। ब्राह्मण-पंडित को बुलाकर उनके मार्गदर्शन-माध्यम से श्राद्ध तर्पण विधि करावें, स्वयं किताब आदि पढ़कर ना करें। शास्त्रोक्त विधि से महालय श्राद्ध कर्म करने में लगभग एक घंटे का समय लगता है। जिन्हें श्राद्ध आदि कर्म करने का समय नहीं है वे घर पर सात्विक भोजन बनाकर ब्राह्मण अथवा गाय को भोजन करावें। इससे कुछ हद तक वे दोषमुक्त रहते हैं। श्राद्ध के भोजन में चावल की खीर, पूड़ी-सब्जी उड़द की दाल के बड़े एवं अदरक नीम्बू की कतरी अवश्य बनाई जानी चाहिए।

यदि आपसे पितृ तिथि चूक जाती है तो उस श्राद्ध तिथि को आप सर्व पितृ अमावस्या के दिन कर सकते हैं। प्रयत्न करना चाहिए कि हम शास्त्रानुसार बताये नियमों के अनुसार इन दिनों तर्पण, पिण्डदान, श्राद्धकर्म अवश्य करें।

आलेख - विश्वनाथ अरूण वैद्य (गुरूजी)
श्री दत्त भजन मंडल (मंदिर पुजारी) गोलबाजार,
जबलपुर, मोबाइल नं. 9424394593

हमारे भगवान के दिन -15, पितृ पक्ष

वर्ष में एक बार पितृ पक्ष आता है जो पूर्णिमा से अश्विन अमावस्या तक चलता रहता है। भगवान हमारे पितृ लोगों को 15 दिन के लिए धरती पर भेजते हैं ये कहकर कि आप लोग अपने लोगों का जो गुणगान करते हैं जा के आप देखें वही लोग आपके लिए क्या कर रहे हैं। इस तरह इस पक्ष में हमारे पितृ हमारे घर की ओर आते है। अतः हम सबको 15 दिन तर्पण कर, जिसकी जो तिथि हो उसमें श्राद्ध कर हम उनका आशीर्वाद ग्रहण करते हैं। जो भी मनुष्य उनका तर्पण एवं श्राद्ध नहीं करता पितृ हमारे अतृप्त होकर अभिशाप देकर चले जाते हैं। हमारा धर्म एवं कर्त्तव्य है जिन्होंने हमें जीवन भर अपना प्यार व आशीर्वाद दिया, उनके लिए भी समय निकालकर यह कार्य अवश्य करना चाहिए और वंश को बढ़ाने एवं सुख शांति का आशीर्वाद उनसे प्राप्त करें।

जब भी हम किसी तीर्थ पर जायें वहाँ पितृों के नाम से श्राद्ध अवश्य करें, यह अत्यन्त फलदायी है।

पंडित कृष्णकांत राव (बाबू भाई)
श्री राम मंदिर, ग्वारीघाट, जबलपुर मो.नं. 9425155041

गयातीर्थ और गयायात्रा

गया नामकरण में गयासुर की कथा

पुराणों में गयासुर की कथा विस्तार में आयी है और यह बताया गया है कि गयासुर के नाम पर ही इस तीर्थ का 'गया' नाम पड़ा । कथा के अनुसार प्राचीनकाल में 'गय' नामक एक असुर था, वह भगवान विष्णु का परम भक्त था। उसने कोलाहल नामक पर्वत पर हजारों वर्षों तक तप किया और अपने तपोबल के प्रभाव से वह देवताओं के लिये भी अजेय हो गया। चिंतित हो देवगण भगवान् विष्णु के पास पहुँचे । भगवान् विष्णु ने कहा – सभी देवता गयासुर के पास चलें। वहाँ पहुँचने पर विष्णु ने उससे कठिन तप का कारण पूछा और वर माँगने के लिये कहा– इस पर गयासुर ने कहा– देव! वह सभी देवताओं, ऋषियों, मुनियों से भी अधिक पवित्र हो जाय। सभी ने 'तथास्तु' कहा। गयासुर प्रसन्न हो तप से विरत हो गया। वरदान के प्रभाव से गयासुर की देह अत्यन्त पवित्र हो गयी, जो भी उसे देखता अथवा उसकी देह का स्पर्श करता, स्वर्ग चला जाता । यह देख ब्रह्माजी बड़े चितिंत हो गये। उनका विधान तथा मर्यादा टूटने लगी। तब भगवान् विष्णु ने ब्रह्माजी से कहा– आप गयासुर के पास जाकर यज्ञ करने के लिये यज्ञभूमि के रूप में उनका पवित्र शरीर माँग लें। ब्रह्मा जी गयासुर के पास गये । उनका दर्शनकर गयासुर बोला–ब्राह्मन ! आज मेरा जन्म सफल हुआ। आपके दर्शन से मैं कृतार्थ हुआ, आप मेरे सफल अतिथि बने, यह मेरे लिये सौभाग्य की बात है' आप अपने आने का प्रयोजन बतायें। तब ब्रह्मा जी ने कहा– महाभाग्य गयासुर ! समस्त पृथ्वी में भ्रमणकर मैंने जिन–जिन तीर्थों को देखा है, यज्ञ के लिये वे तुम्हारी देह से कम ही पवित्र हैं। अतः तुम्हारी देह के समान अन्य कोई पवित्रतम स्थान नहीं है। भगवान विष्णु के वर से तुम्हारी देह सर्वाधिक पावन हो गयी है, अतः मुझे यज्ञ करने के लिये तुम अपने शरीर का दान कर दो। गयासुर बोला–हे देवदेवेश! आप हमारे शरीर के लिये प्रार्थना कर रहे हैं, यह हमारा धन्यभाग है, आप जैसे चाहें वैसे यज्ञ करें, यह शरीर तो आपकी ही रचना है। यह कहते हुए गयासुर ने सहर्ष अपनी देह समर्पित कर दी। विराट् शरीरवाला गयासुर उत्तर की ओर सिर तथा दक्षिण की ओर पैर करके वहीं भूमि पर सो गया। ब्रह्मा जी ने यज्ञ की सारी सामग्रियाँ तैयार कीं और उसकी देह के ऊपर यज्ञानुष्ठान होने लगा, किन्तु गयासुर का शरीर हिलने लगा। ब्रह्मा जी ने धर्म से कहकर पवित्र धर्मशिला उसके शरीर पर रखवायी, फिर भी शरीर हिलता रहा। तब ब्रह्माजी ने तथा देवताओं ने अपनी अभीष्ट सिद्धि न होते देख भगवान् विष्णु का आवाहन् किया। गदाधर भगवान् विष्णु अपने लोक से तत्क्षण वहाँ पहुँच गये और वे उसके ऊपर स्थित हो गये तथा उन्होंने अपनी गदा के द्वारा गयासुर को स्थिर कर दिया। उस समय गयासुर ने वरदान माँगते हुए कहा कि जब तक पृथ्वी, सूर्य, चन्द्रमा, तारे आदि रहें, तब तक ब्रह्मा, विष्णु महेश्वर आदि सभी देवता इस तीर्थपर निवास करें। यह तीर्थ उसके नाम पर प्रसिद्ध हो तथा सभी तीर्थ यहाँ निवास करें। सभी देव व्यक्त तथा अव्यक्त (पदचिन्ह)– के रूप में यहाँ विद्यमान रहें और यहाँ किये गये श्राद्ध तथा पिण्डदान से पितरों का तो उद्धार हो ही श्राद्धकर्ता का भी कल्याण हो।

गयासुर का वचन सुनकर विष्णु आदि देवताओं ने कहा– तुमने जो कुछ भी माँगा है, यह सब निश्चित रूप से पूर्ण होगा ।

गयासुर वचः श्रुत्वा प्रोचुर्विष्णवादयः सुराः ।
त्वया यत्प्रार्थितं सर्वं तद्धविष्यत्यसंशयम्।।

(वायुपु. १०६—७१)

गयानामक असुर की पूरी देह जो लगभग 10 मील विस्तृत है, परम पवित्र है। उस पर कहीं भी पिण्डदान करने से पितर प्रेतयानि तथा नरक से छूटकर अक्षय तृप्ति प्राप्त करते हैं।

तभी से गयातीर्थ देवतीर्थ तथा पितृतीर्थ के रूप में विख्यात हुआ।

गया के पुण्यप्रद स्थान

सम्पूर्ण गयाक्षेत्र में पितरों के कल्याण की कामना से सभी तीर्थ तथा देवता प्रतिष्ठित हैं। स्वयं पितृगण भी यहाँ निवास करते हैं। यहाँ भगवान् विष्णु आदिगदाधर के नाम से विराजते हैं। यहाँ के कुछ प्रमुख स्थान इस प्रकार हैं– फल्गुतीर्थ,विष्णुपद,गदाधर, गयाशिर, मुण्डपृष्ठ, आदिगया,

धौतपाद, सूर्यकुण्ड, जिह्वालोल, सीताकुण्ड, रामगया, उत्तरमानस, रामशिला, काकबलि,प्रेतशिला,ब्रह्मकुण्ड, वैतरणी,भीमगया, भस्मकूट, गोपचार, ब्रह्मसरोवर, अक्षयवट, गदालोल,मंगलागौरी, आकाशगंगा, गायत्रीदेवी, संकटादेवी, प्रपितामहेश्वर, ब्रह्मयोनि, बोधगया आदि।

गया यात्री को प्रतिदिन प्रातः फल्गुनदी में स्नान, तर्पण आदि के अनन्तर भगवान् गदाधर का पूजन एवं विष्णु पद का दर्शन करके अन्य तीर्थों में श्राद्धादि कार्य सम्पन्न करना चाहिये।

यहाँ के कुछ प्रमुख तीर्थों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है-

1- फल्गुतीर्थ

फल्गु गया का प्रथम तीर्थ है। गया पहुँचकर सर्वप्रथम फल्गुतीर्थ में ही श्राद्ध सम्पन्न होता है। गया के तीर्थों में फल्गु का विशेष महत्व है। इसे गया का शिरोभाग तथा आभ्यन्तर तीर्थ कहा गया है। फल्गुतीर्थ में स्नान करके भगवान् गदाधर का दर्शन करने से सभी पुण्यफलों की प्राप्ति होती है। भूतलपर समुद्रपर्यन्त जितने भी तीर्थ और सरोवर हैं, वे सब प्रतिदिन एक बार फल्गुतीर्थ में आया करते हैं। तीर्थराज फल्गुतीर्थ में जो श्राद्ध के साथ स्नान करता है, उसका वह स्नान पितरों को ब्रह्मलोक की प्राप्ति करानेवाला तथा अपने लिये भोग और मोक्ष की सिद्धि करनेवाला होता है (अग्निपुराणअ. ११५—२५—३०)। फल्गु अमृत की धारा बहाती है। यहाँ पितरों के उद्देश्य से किया हुआ दान अक्षय होता है। यहाँ गया जाने पर प्रतिदिन फल्गु में स्नानकर अन्य पदों में श्राद्धादि की विधि है।

नारदपुराण में बताया गया है कि फल्गुतीर्थ में श्राद्ध करने से पितरों की तथा श्राद्धकर्ता की भी मुक्ति होती है। पूर्वकाल में ब्रह्मा जी की प्रार्थना से भगवान् विष्णु स्वयं फल्गुरूप से प्रकट हुए थे। समस्त लोकों में जो सम्पूर्ण तीर्थ हैं, वे सब फल्गुतीर्थ में स्नान करने के लिये आते हैं। गंगाजी भगवान् विष्णु का चरणोदक हैं और फल्गुरूप में साक्षात् आदिगदाधर प्रकट हुए हैं। वे स्वयं ही द्रव (जल)-रूप में विराजमान हैं, फल्गु में स्नान करते समय निम्न मन्त्र का उच्चारण करना चाहिये।-

फल्गुतीर्थं विष्णु जले करोमि स्नानमद्य वै।
पितृणां विष्णुलोकाय भुक्ति मुक्ति प्रसिद्धये।

2- धर्मशिला (प्रेतशिला)

धर्मशिला माहात्म्य में एक कथानक इस प्रकार प्राप्त होता है - प्राचीनकाल में धर्म की पुत्री धर्मव्रता नाम एक सुलक्षणा कन्या उत्पन्न हुई। वह इतने दिव्य गुणों से सम्पन्न थी कि बहुत ढूँढ़ने पर भी पिता को उसके अनुरूप कोई योग्य वर नहीं मिला। तब पिता धर्म ने उससे कहा- बेटी! अपने अनुरूप पति प्राप्त करने के लिये तपस्या करो। पिता की आज्ञा से धर्मव्रता कठिन तप में संलग्न हो गयी। उसकी तपस्या से प्रसन्न हो ब्रह्मा जी के मानसपुत्र महर्षि मरीचि वहाँ आये और उन्होंने उसके गुणों की प्रशंसा करते हुए उसे पत्नी रूप में स्वीकार किया। मरीचि ने धर्म के पास आकर कन्या की याचना की और धर्म ने सहर्ष स्वीकार कर धर्मव्रता उन्हें सौंप दी। धर्मव्रता महर्षि के आश्रम में आकर उनकी सेवा-शुश्रुषा करने लगी। एक दिन जब धर्मव्रता अपने पति महर्षि मरीचि के चरण दबा रही थी, उसी समय वहाँ ब्रह्माजी पधारे। 'ये मेरे ससुर हैं'- यह जानकर धर्मव्रता ने उठकर उनका स्वागत किया, किंतु महर्षि मरीचि ने इसे पतिसेवा-त्याग रूप अपराध माना और पत्नी को शिला होने का शाप दे दिया **'शापदग्धा शिलाउ भव'** (वायुपु०१०७—२७)। इसके पश्चात् धर्मव्रता ने हजारों वर्षों तक कठोर तप किया। उसके तप से प्रसन्न हो भगवान् नारायण तथा देवता उसके पास आये और उन्होंने वर माँगने को कहा। इस पर धर्मव्रता ने कहा-

देववृन्द! मैं निखिल बह्माण्ड में परम पावन शिला के रूप में प्रादुर्भूत होऊँ। जितने भी नद, नदी, सरोवर, तीर्थ एवं देवादि हैं, उन सबसे अधिक पवित्रता मुझमें निवास हो' यही नहीं जितने भी ऋषि, मुनि एवं प्रमुख देवगण हैं, उन सबसे अधिक पवित्रता मुझमें हो। समस्त त्रैलोक्य में जितने में व्यक्त अव्यक्त लिंगादि हैं, वे सब तीर्थरूप धारणकर मेरे शिलारूप शरीर में निवास करें।[1]

धर्मव्रता ने आगे कहा - शिला पर स्थित तीर्थों में स्नान एवं तर्पणकर जिनका पिण्डदानात्मक श्राद्ध हो, वे ब्रह्मालोक को प्राप्त करें। जिस प्रकार भगवान् विष्णु की पूजा कर लेने पर सभी प्रकार के यज्ञ पूर्ण हो जाते हैं, उसी प्रकार यहाँ श्राद्ध, तर्पण एवं स्नान करने से अक्षय फल की प्राप्ति हो।[2]

पतिपरायणा धर्मव्रता के उन पवित्र वचनों को सुनकर देवताओं ने कहा– धर्मव्रते! तुम्हारी अभिलाषाएँ पूर्ण होंगी– इसमें संदेह की आवश्यकता नहीं है। गयासुर के सिर पर जब तुम स्थिर होगी, तब चरणादि रूप से हम सभी तुम्हारे शरीर पर स्थिर होंगे–

त्वया यत्प्रार्थितं सर्वं तद्भविष्यत्यसंशयम् ।।
गयासुरस्य शिरसि भाविष्यसि यदा स्थिरा।
तदा पादादिरूपेण स्थास्यामस्त्वयि सुस्थिराः।।

(वायुप० १०७– ५७ –५८)

ऐसा वरदान देकर देवता अन्तर्धान हो गये।

3 – अक्षयवट

गया जी में अक्षयवट के नीचे पितरों के निमित्त किया गया श्राद्ध तथा ब्राह्मण–भोजन अक्षय फलदायी और सभी पापों का विनाश करनेवाला होता है।–

पित्रादीनामक्षयाय सर्वपापक्षयाय च।
श्राद्ध वटतले कुर्याद् ब्राह्मणानां च भोजनम्

(अग्निपु० ११५–७१)

पितरों को अक्षय ब्रह्मलोकप्राप्ति की कामना से निम्न मन्त्र से अक्षयवट का पूजन एवं नमस्कार करना चाहिये–

संसार वृक्षशस्त्रायाशेषपापक्षयाय च।
अक्षय्यब्रह्मदात्रे च नमोऽक्षय्यवटाय च।।

जो संसाररूपी वृक्ष का उच्छेद करने के लिये शस्त्रस्वरूप हैं, जो समस्त पापों का नाश तथा अक्षय ब्रह्मलोक प्रदान करने वाले हैं, उन अक्षयवटस्वरूप श्री हरि को नमस्कार है।

अक्षयवट के नीचे शय्यादान की भी विधि है। अक्षयवटतीर्थ में अन्न द्वारा विधिपूर्वक श्राद्ध करनेवाला अपने पितृगणों को अक्षय एवं सनातन ब्रह्मलोक पहुँचाता है। वटवृक्ष के नीचे समीप शाक अथवा जलद्वारा भी यदि एक विप्र को भोजन करा दिया जाय तो उसे कोटि ब्राह्मणों को भोजन कराया हुआ समझना चाहिये–

कृते श्राद्धेऽक्षयवटे अन्नेनैव प्रयत्नतः।
पितृन् नयेद् ब्रह्मलोकमक्षयं तु सनातनम्।।
वटवृक्षसमीपे तु शाकेनाप्युदकेन वा।
एकस्मिन् भोजिते विप्रे कोटिर्भवति भोजिता।।

(वायुपु० १११– ८० –८१)

गयाश्राद्ध का काल

सामान्यतः श्राद्ध के लिये जो वर्जनीय काल हैं, उनमें भी गयाश्राद्ध की अवश्यकर्तव्यता के बोधक वचन शास्त्रों में प्राप्त होते हैं। इसी दृष्टि से कहा गया है कि '**गयायां सर्वकालेषु पिण्डं दद्याद् विचक्षणः।**' (वायुपु० १०५–१८) अर्थात् गया में सभी समय श्राद्ध किया जा सकता है। गया श्राद्ध के लिये समय का कोई प्रतिबंध नहीं है, चाहे अधिमास हो, गरु–शुक्र अस्त हों, जन्ममास या जन्मदिन हो, बृहस्पति सिंह राशि में स्थित हों– सभी समय श्राद्ध किया जा सकता है–'**अधिमा से**

---

1. **मह्यं वरं प्रयच्छध्वं एवंविधमनुत्तमम्।।**
शिलाऽहं हि भविष्यामि बह्मण्डे पावनी शुभा। नदीनदसरस्तीर्थदेवादिभ्योऽतिपावनी।।
ऋष्यादिभ्यो मुनिभ्यश्च मुख्यदेवेभ्य एव च। त्रैलोक्ये यानि लिङ्गानि व्यक्ताव्यक्तात्मकान्यपि॥
तानि तिष्ठन्तु मद्देहे तीर्थरूपेण सर्वदा।।

(वायुपु० १०७/४२–४४)

2. **शिलास्थितेषु तीर्थेषु स्नात्वा कृत्वाथ तर्पणम् श्राद्धं सपिण्डकं येषां ब्रह्मलोकं प्रयान्तु ते।।**
यथार्चिते हरौ सर्वे यज्ञाः पूर्णा भवन्ति हि। तथा श्राद्धं तर्पणं च स्नानं चाक्षयमस्त्विह।।

(वायुपु० १०७–४६–४९)

जन्मदिने चास्तेऽपि गुरुशुक्रयोः ।। च त्यक्तव्यं गयाश्राद्धं सिहंस्थेत्पि बृहस्पतौ। चन्द्रसूर्यग्रहे चैव मृतानां पिण्डकर्मसु।।'

(वायुपु० १०५— १८ —१९) गयाधाम में पिण्डदान बहुत दुर्लभ माना गया है। मीन, मेष, कन्या, धनु एवं वृष राशि पर जब सूर्य हों, उस समय गयातीर्थ परम दुर्लभ है। ऋषिगण सर्वदा यह कहते आये हैं कि तीनों लोकों में गया का पिण्डदान परम दुर्लभ है। मकर राशि पर जब चन्द्रमा और सूर्य स्थित हों, उस समय तीनों लोकों में गयाश्राद्ध अत्यन्त दुर्लभ माना गया है-

मीने मेषे स्थिते सूर्ये कन्यायां कार्मुके घटे ।
गयायां दुर्लभं लोके वदन्ति ऋषयः सदा ।।
दुर्लभं त्रिषु लोकेषु गयायां पिण्डपातनम्।।
मकरे वर्तमाने च ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः ।
दुर्लभं त्रिषु लोकेषु गयाश्राद्धं सुदुर्लभम् ।।

(वायुपु० १०५— ४७ —४८)

ऐसे ही संक्राति आदि में विशेष रूप से गया में श्राद्ध करना चाहिये-

गयाश्राद्धं प्रकुर्वीत संक्रान्त्यादौ विशेषतः।।

त्रिस्थलीसेतुसार संग्रह में पद्मपुराण के वचन से बताया गया है कि गया की यात्रा अधिमास में, जन्मनक्षत्र में तथा गुरु, शुक्र के अस्त होने पर भी की जा सकती है-

अधिमासे च जन्मर्क्षे अस्ते च गुरुशुक्रयोः।
तीर्थयात्रा न कर्तव्या गयां गोदावरीं विना।।

गयायात्रा संबंधी जानने योग्य आवश्यक बातें

श्री गयाधाम की यात्रा एक विशिष्ट महोत्सव है। यह यात्रा पितरों के कल्याण के लिये की जाती है। श्री गयातीर्थ के यात्रार्थी को चाहिये कि तीर्थयात्रा का अधिकारी बनने के लिये वह सर्वप्रथम किसी दैवज्ञ से गयायात्रा का मुहूर्त ज्ञात कर ले तथा यात्रा प्रारंभ करने के तीन दिन पूर्व अत्यन्त संयम-नियमपूर्वक रहे। प्रथम दिन एक समय भोजन करना चाहिये तथा दूसरे दिन हविष्यान्न (चावल, गेहूँ जौ, मूँग, तिल आदि पवित्र अन्न तथा दूध, दही, घी आदि गव्य पदार्थ) ग्रहण करना चाहिये और तीसरे दिन उपवास करना चाहिये। चौथे दिन प्रातः स्नान-सन्ध्यादि नित्यकर्म करके पूजा की सामग्री एकत्रित कर आसन पर पूर्वाभिमुख बैठकर आचमन-प्राणायाम करके यात्रा की निर्विघ्न-परिपूर्णता की सिद्धि लिये स्वस्ति- पुण्याहवचनपूर्वक गणेशाम्बिका तथा अपने इष्टदेवता का स्मरण-पूजन करना चाहिये।

पूजन के अनन्तर घर में गयातीर्थयात्रांगभूत पार्वणविधि से प्रचुर धृतमिश्रित हविष्यान्न से घृतश्राद्ध करना चाहिये। इससे कार्यारम्भा* (यात्रारम्भ) हो जाता है इसके बाद यदि कोई जननाशौच या मरणाशौच आ जाता है तो अशौच (सूतक) प्रवृत्त नहीं होता-

व्रतयज्ञविवाहेषु श्राद्धे होमेऽर्चने जपे।
प्रारब्धे सूतकं न स्याद् अनरब्धे तु सूतकम्।

(त्रिस्थलीसेतुसारसंग्रह में विष्णुपुराण का वचन)

घृतश्राद्ध के अनन्तर ब्राह्मणों का पूजन कराना चाहिये और उनसे तथा गुरुजनों एवं मित्रों से गयायात्रा के लिये आज्ञा प्राप्तकर गयायात्रा का संकल्प करना चाहिये। किसी दोने में धुले हुए चावल में पंचगव्य मिलाकर रख ले और गीत -वाद्य के साथ उन्हीं अक्षतों को छींटते हुए ईशानकोण से ईशानकोणतक गाँव की प्रदक्षिणा करनी चाहिये- 'ग्रामप्रदक्षिणा कार्या गीतवाद्य समन्विता।' ग्राम की प्रदक्षिणा असम्भव हो तो घर की ही प्रदक्षिणा करनी चाहिये अथवा अपने ही स्थान पर प्रदक्षिणा कर ले।

तदन्तर अन्य अक्षतों को लेकर पितरों का आवाहन करना चाहिये। पितरों के आवाहित किये हुए अक्षतों को बाँधकर या सच्छिद्र गरीगोले में रखकर गयायात्रा में साथ ले जाना चाहिये और गयाकूप में अथवा धर्माण्य में डाल देना चाहिये।

पितरों के आवाहन के बाद एक या तीन ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिये या निष्क्रय -द्रव्य देना चाहिये और घर से प्रस्थान करना चाहिये। श्राद्ध से बचे हुए घृतबहुल हविष्यान्न को साथ में ले ले। कुछ दूर जाकर किसी देवालय, धर्मशाला आदि में टिक जाय। यहाँ साथ में लाये हुए श्राद्ध से बचे हुए घृतबहुल हविष्यान्न से पारणा करे। अगले दिन नित्यकर्म करके पुनः तीर्थयात्रा का वेष धारण करना चाहिये। काषाय वस्त्र धारण कर ले अथवा वस्त्र का एक कोना गैरिक रंग से रँग लेना

प्रारम्भो वरणं यज्ञे सङ्कल्पो व्रतसत्रयोः। नान्दीमखं विवाहादौ श्राद्धे पाकपरिक्रिया।। (त्रिस्थलीसेतुसारसंग्रह में विष्णु पुराण का वचन)

चाहिये। ये वस्त्र केवल यात्रा में ही धारण करने चाहिये। अन्य कार्यों में श्वेत वस्त्र धारण करे।

वायुपुराण में यात्रा का नियम बताया गया है कि विधिपूर्वक श्राद्ध सम्पन्न कर जो व्यक्ति गयायात्रा के लिये उद्यत हो, उसे चाहिये कि सर्वप्रथम श्राद्धकर काषाय वस्त्र धारणकर अपने ग्राम की प्रदक्षिणा करे, फिर दूसरे ग्राम में जाकरश्राद्ध से शेष अन्न का भक्षण करे। दानादि न लेते हुए प्रतिदिन यात्रा करे। प्रतिग्रह से बचते हुए संतुष्टचित्त होकर इन्द्रियों को वश में करके पवित्र मन एवं शरीर से अहंकारादि को छोड़कर जो गया की यात्रा करता है, वह तीर्थ का वास्तविक फल प्राप्त करता है–

उद्यतश्चेद् गयां गन्तुं श्राद्धं कृत्वा विधानतः।
विधाय कार्पटीवेषं कृत्वा ग्रामप्रदक्षिणम्।।
ततो ग्रामन्तरं गत्वा श्राद्धशेषस्य भोजनम्।
ततः प्रतिदिनं गच्छेत् प्रतिग्रहविवर्जितः।।
प्रतिग्रहादुपावृत्तः सन्तुष्टो नियतः शुचिः।
अहंकारविमुक्तो यः स तीर्थफलमश्नुते।।

(वायुपु० ११०— २—४)

गयायात्री को चाहिये कि वह -

(1) यात्रा के समय दूसरे का कुछ न खाय।

(2) दान भी न ले ।

(3) एक समय भोजन करे।

(4) यात्रा के समय भगवान् दामोदर, गदाधर, फल्गुगंगा का स्मरण करता रहे।

(5) असत्यभाषण,कटुभाषण न करे और किसी की निन्दा न करे।

(6) छल, कपट, चोरी धोखा और विश्वासघात न करे।

(7) रास्ते में कोई तीर्थ पड़ जाय तो यथा संभव वहाँ पार्वणविधि से अथवा तीर्थश्राद्धविधि से श्राद्ध करते हुए आगे बढ़े। कुछ लोग काशी में पिशाचमोचन में त्रिपिण्डी श्राद्ध करके यात्रा करते हैं तथा कुछ लोग प्रयाग में त्रिवेणीसंगम पर श्राद्ध कर प्रस्थान करते हैं।

(8) गया यात्री को अपने अन्य संबंधियों तथा सम्पर्कियों के नाम, गोत्र इत्यादि भी लिखकर ले जाने चाहिये ताकि वह वहाँ उनके नाम से तर्पण एवं पिण्डदान कर सके।

(9) मार्ग में पुनः पुनः तीर्थ में पहुँचकर तीर्थ को प्रणाम करे तथा निम्न मन्त्रों से पितरों का आवाहन करना चाहिये–

पुनः पुनेति विख्याता पितृणां तीर्थमुत्तमम्।
अस्मत्कुले मृता ये च आगच्छन्तु पुनः पुनाम्।।

पुनः पुनः में श्राद्ध कर गया पहुँचे। गया पहुँचकर सवारी से उतरकर कुछ दूर पैदल चलना चाहिये। तदन्तर गयाधाम को '**ॐ गयायै नमः,ॐ गदाधराय नमः**' कहकर साष्टांग प्रणाम करना चाहिये।

वायु पुराण ने बताया है कि तीर्थ में श्राद्ध करने वाले पुरुषों को काम, क्रोध तथा लोभ को छोड़कर सारी क्रियाएँ करनी चाहिये। ब्रह्मचर्य व्रत धारणकर एक समय भोजन करना चाहिये। पृथ्वीपर शयन करना चाहिये। सत्य वचन बोलना चाहिये तथा मन एवं शरीर से पवित्र रहना चाहिये। सभी जीवों के कल्याणसाधन में निरत रहना चाहिये। जो इन नियमों का पालन करता है, वह तीर्थ का वास्तविक फल प्राप्त करता है।

तीर्थश्राद्धं प्रयच्छद्भिः पुरुषैः फलकाङ्क्षिमिः।
कामं क्रोधं तथा लोभं त्यक्त्वा कार्या क्रियानिशाम्।।
ब्रह्मचर्यैकभोजी च भूशायी सत्यवाक् शुचिः।
सर्वभूतहिते रक्तः स तीर्थफलमश्नुते।।

जिसके हाथ– पैर एवं मन संयत रहते हैं; विद्या, तप एवं कीर्ति की बहुलता रहती है, वह वास्वविक तीर्थफल का उपभोग करता है–

यस्य हस्तौ च पादौ च मनश्चादि सुसंयतम् ।
विद्या तपश्च कीर्तिश्च स तीर्थफलमश्नुते।।

इस प्रकार गया पहुँचने पर फल्गु, विष्णुपद, अक्षयवट आदि सभी तीर्थों में स्नान, तर्पण, श्राद्ध, देवपूजन करना चाहिये। गया में सत्रह दिन (तीन पक्ष), सात दिन, पाँच दिन अथवा तीन दिन तक श्राद्ध करने की व्यवस्था शास्त्र दी है। सबसे अन्त में गायत्रीघाट पर दही, अक्षत का पिण्ड देकर गयाश्राद्ध पूर्ण किया जाता है।

साभार – कल्याण मासिक पत्रिका
माह जून 2025 (गीता प्रेस) में प्रकाशित

श्रद्धांजलि

स्व. श्री गोविंद शंकर रेवा शंकर पंड्या वड़ोदरा–मुम्बई

स्व. श्री गोविंद शंकर पंड्या जी का जन्म 19 मार्च 1930 को सागर में एक सुसंस्कारी आदर्शवादी परिवार में हुआ था। उनके पिता स्वर्गीय श्री रेवा शंकर पंड्या एवं माता स्व.श्रीमती रुक्मणी देवी भी धार्मिक, कर्तव्यनिष्ठ एवं स्वावलंबी थे। आपके पिताजी देश के स्वतंत्रता संग्राम के आंदोलन में भी सक्रिय रूप से जुड़े हुए थे। आप तीन भाइयों स्व. श्री आनंद शंकर पंड्या एवं स्व. श्री प्रताप शंकर पंड्या में सबसे छोटे भाई थे।

परिवार के संस्कारों का श्री गोविंद शंकर जी के जीवन पर विशेष प्रभाव रहा जो अंत तक उनके साथ रहा । उनके जीवनकाल में ''सादा जीवन उच्च विचार'' यह मंत्र उनके जीवन में विशेष मूल्य रखता था । आर्थिक परिस्थितियों के कारण पूरे परिवार को सागर से काशी विस्थापित हो जाना पड़ा। कालांतर में इस परिवार ने वाराणसी एवं मुंबई को अपनी कर्मभूमि बनाया।

वाराणसी में भी इस परिवार को आर्थिक चुनौतियों का सामना करना पड़ा था लेकिन अंततः यह परिवार अपनी कर्तव्यनिष्ठा के कारण एक बहुत ऊंचे मुकाम पर पहुंचा । इन्हें उन दिनों का स्मरण अंत तक रहा ।

इनके बाल्यकाल के दौरान इनकी माता को टी. बी. हो गई थी ,उस समय में टी. बी. एक जानलेवा बीमारी मानी जाती थी । कई वर्षों तक मावली (आज के उत्तराखंड के) एक सेनीटोरियम में रहीं। अत: इनका बाल्यकाल माता के वात्सल्य के अभाव में व्यतीत हुआ। इस दौरान इनके दोनों बड़े भ्राताओं ने इनका पालन पोषण किया। इन तीनों भाइयों में अंत तक प्रगाढ़ प्रेम भाव बना रहा। ईश्वर की कृपा से उनकी माताजी पूर्णतः स्वस्थ हुईं और दीर्घायु तक जीवन व्यतीत किया ।

वर्ष 1954 में इनका विवाह श्रीमती सरोज पंड्या से हुआ। श्रीमती सरोज पंड्या ने काशी हिंदु विश्वविद्यालय से संस्कृत में गोल्ड मेडल प्राप्त करते हुए स्नातक डिग्री हासिल की थी । उनके सफल दांपत्य जीवन में इनके पुत्र श्री विक्रम शंकर एवं पुत्री श्रीमती अपर्णा का जन्म हुआ।

स्वर्गीय श्री गोविंद शंकर जी पंड्या बहुमुखी प्रतिमा के धनी थे। इन्हें हिंदी साहित्य एवं शास्त्रीय संगीत में विशेष रूचि थी। स्कूली शिक्षा के दौरान कविता पाठ और वेद उच्चारण की अनेक प्रतियोगिताओं एवं समारोह में भागीदारी करते थे । स्कूली शिक्षा के पश्चात् महाविद्यालयीन शिक्षा हेतु काशी हिंदू विश्वविद्यालय में हिन्दी साहित्य मे स्नातक डिग्री हेतु प्रवेश लिया, किन्तु बाद में अपने भाईयों एवं पिताजी की सलाह से इन्होंने वाणिज्य संकाय में प्रवेश लिया एवं बी.काम., एम.कॉम. एवं एल.एल.बी.करते हुए चार्टर्ड अकाउंटेंट बने । वाणिज्य के क्षेत्र में अध्ययन के साथ–साथ इन्होंने साहित्य विशारद की भी डिग्री प्राप्त की थी।

साहित्य और संगीत में उनकी रूचि अंत तक बनी रही। साहित्यिक गतिविधियों एवं भारतीय शास्त्रीय संगीत में भी विशेष रूचि रखते हुए बांसुरी वादन में भी अपना दखल रखा और जीवन के अंत काल तक संगीत बजाना और सुनना उनकी दिनचर्या का अभिन्न अंग बना रहा । इन्होंने वेदों और उपनिषदों का भी गहन अध्ययन किया था। वह नित्य प्रति संध्या वंदना, रुद्र पाठ, दुर्गा सप्तशती, श्री सूक्त इत्यादि का भी पाठ करते थे । साथ ही ज्योतिष शास्त्र में भी निपुणता हासिल की थी । इन्होंने आयुर्वेदिक के क्षेत्र में भी अध्ययन किया था और कई काढ़ों के फार्मूला बनाए थे, जिन्हें आज भी हमारा कुटम्ब '' काका जी के काढ़े'' के नाम से याद करता है । कालांतर में अपने पिताजी और भाइयों के साथ व्यापार में कुछ साल रहने के बाद वे नौकरी पेशे में चले गए । वे इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन में एकाउंट ऑफीसर के पद पर नियुक्त हुए तथा इंडियन आईल कारपोरेशन लिमिटेड कंपनी के फाइनेंस डायरेक्टर के पद से सेवानिवृत्त हुए । सेवानिवृत्ति के बाद उन्होंने अपने पुत्र और अपने भाइयों के सहयोग से शंकर पैकेजिंग के नाम से एक उद्योग लगाया जो आज सफलतापूर्वक अपने प्रोडक्ट का निर्यात विभिन्न देशों को करता है।

आप दान धर्म के प्रति भी विशेष आस्था रखते थे । वह यह मानते थे कि हर मनुष्य को अपने द्वारा अर्जित धन में से कुछ हिस्सा दान – धर्म के लिए भी अलग से रखना चाहिए, उन्होंने अपने जीवन काल में अपने स्वर्गीय पिता एवं दादाजी के नाम से एक ट्रस्ट बनाया था, जो ''रेवा शंकर दुर्गा शंकर चेरिटेबल ट्रस्ट'' के नाम से संचालित किया जा रहा है। यह ट्रस्ट वृद्धों तथा शिक्षा एवं धर्म के क्षेत्र में सहयोगात्मक कार्य करता है । इस ट्रस्ट को वर्तमान में उनकी पुत्री श्रीमती अपर्णा कुलकर्णी एवं पुत्रवधु श्रीमती रति विक्रम पंड्या द्वारा संचालित किया जाता है। अल्पकाल की बीमारी के पश्चात् 15 फरवरी 2025 को 95 वर्ष की उम्र में बड़ोदरा में अपने परिवार के साथ रहते हुए पुत्र– पुत्रवधू , पुत्री – दामाद, पौत्र, पौत्री, प्रप्रौत्र सहित एक भरा – पूरा संपूर्ण परिवार छोड़कर एवं अपने जीवन काल में विभिन्न नेक कार्यों को करते हुए वे इस सांसारिक धरा से बिदा हुए।

विक्रम शंकर पंड्या

वड़ोदरा (गुजरात)

श्रद्धांजलि

स्व. गोविंद शंकर रेवा शंकर पंड्या (वड़ोदरा)

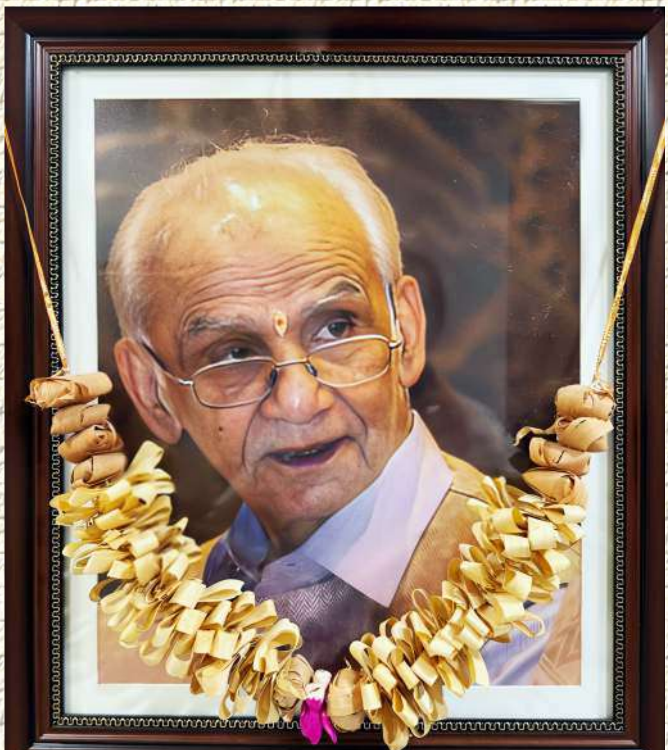

जन्म - 19 मार्च 1930 ● निधन - 15 फरवरी 2025

रूक्मणी बेन - रेवा शंकर पंड्या

श्रीमती सरोज - गोविंद शंकर पंड्या

प्रताप शंकर - गोविंद शंकर - आनंद शंकर जी

सरोज बेन - विद्या बेन - तारा बेन

उपलब्धियाँ

जान्हवी सुपुत्री श्रीमती अनुराधा श्री रुपेश जोशी, वाराणसी ने कक्षा बारहवीं की परीक्षा सी.बी.एस.ई. बोर्ड से 97% प्राप्तांकों के साथ उत्तीर्ण की है। आप डी.पी.एस. वाराणसी, की छात्रा रही हैं। आपने CUET UG में 99 परसेंटाइल अंक प्राप्त किये हैं। इनको स्कूल की ओर से एक मेडिल, तीन 'सार्टिफिकेट ऑफ एक्सीलेंस' एवं रु. 6100/- का चेक देकर सम्मानित किया गया।

आदित्य सुपुत्र श्रीमती डॉ. स्वाती - श्री डॉ. अभिनव पंड्या, भोपाल, ने कक्षा बारहवीं की परीक्षा सी.बी.एस.ई. बोर्ड से 91.6% प्राप्तांकों के साथ उत्तीर्ण की है। आप डी.पी. एस.स्कूल भोपाल, के छात्र रहे हैं।

श्रेयस सुपुत्र श्रीमती शैली-श्री आशीष दवे, हैदराबाद, ने कक्षा बारहवीं की परीक्षा सी. बी. एस. ई. बोर्ड से 91.4% प्राप्तांकों के साथ उत्तीर्ण की है। आप डी.डी.एम.एस. अब्दुल रेड्डी पब्लिक स्कूल, हैदराबाद के छात्र रहे हैं।

अन्वी सुपुत्री श्रीमती निमिशा-श्री राजीव दवे, भोपाल, ने कक्षा बारहवीं की परीक्षा सी.बी.एस.ई. बोर्ड से 91.2% प्राप्तांकों के साथ उत्तीर्ण की है। आप एम.वी.एम. रतनपुर स्कूल भोपाल की छात्रा रही हैं।

तेजस सुपुत्र श्रीमती शैली-श्री आशीष दवे, हैदराबाद, ने कक्षा बारहवीं की परीक्षा सी.बी.एस.ई. बोर्ड से 91% प्राप्तांकों के साथ उत्तीर्ण की है। आप डी. डी. एम. एस. अब्दुल रेड्डी स्कूल हैदराबाद के छात्र रहे हैं।

निलोत्पल सुपुत्र श्रीमती स्वेता-श्री महेश व्यास, अहमदाबाद, ने कक्षा बारहवीं की परीक्षा सी.बी.एस.ई. बोर्ड से 86.8% प्राप्तांकों के साथ उत्तीर्ण की है। आप डी.ए.वी. इंटरनेशनल स्कूल, अहमदाबाद के छात्र रहे हैं।

परिशि सुपुत्री श्रीमती शिल्पी-श्री ऋषि जोशी दीक्षित, पूणे, ने कक्षा बारहवीं की परीक्षा सी.बी.एस.ई. बोर्ड से 84.8% प्राप्तांकों के साथ उत्तीर्ण की है। आप कल्याणी स्कूल हदप्सर, पुणे की छात्रा रही हैं।

शाम्भवी सुपुत्री श्रीमती कीर्ति-श्री संतोष पंड्या, जबलपुर, ने कक्षा बारहवीं की परीक्षा सी. बी. एस. ई. बोर्ड से 84.2% प्राप्तांकों के साथ उत्तीर्ण की है। आप पी.एम.श्री केन्द्रीय विद्यालय-1 जबलपुर की छात्रा रही हैं।

नाव्या सुपुत्री श्रीमती स्वेता-श्री अंशुल त्रिवेदी, सागर, ने कक्षा बारहवीं की परीक्षा सी.बी.एस.ई. बोर्ड से 80.6% प्राप्तांकों के साथ उत्तीर्ण की है। आप किड्स एकादमी हायर सेकेन्ड्री स्कूल, सागर की छात्रा रही हैं।

मानसी सुपुत्री श्रीमती शालिनी-श्री मनीष त्रिवेदी, बेंगलुरु ने कक्षा बारहवीं की परीक्षा सी.बी.एस.ई. बोर्ड से 88% प्राप्तांकों के साथ उत्तीर्ण की है। आप डी.पी.एस. बेंगलुरु की छात्रा रही हैं।

वत्सल्य सुपुत्र श्रीमती जया - श्री धीरज दवे, रायपुर ने कक्षा दसवीं की परीक्षा सी. बी. एस. ई. बोर्ड से 97.8% प्राप्तांकों के साथ उत्तीर्ण की है। आप आदर्श विद्यालय टाटीबंध रायपुर के छात्र रहे हैं।

अनुष्का सुपुत्री श्रीमती प्रीति-श्री अनुराग पंड्या, हरिद्वार ने कक्षा दसवीं की परीक्षा सी.बी.एस.ई. बोर्ड से 97.8% प्राप्तांकों के साथ उत्तीर्ण की है। आप बी.एम.एल. मुंजल ग्रीनस विद्यालय हरिद्वार की छात्रा रही हैं।

उपलब्धियाँ

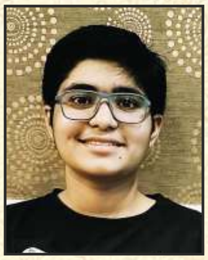

अनुष्का सुपुत्री श्रीमती विश्वभारती-श्री अमित सेलट देहरादून ने कक्षा दसवीं की परीक्षा सी.बी.एस.ई. बोर्ड से 97.2% प्राप्तांकों के साथ उत्तीर्ण की है। आप सैनिक स्कूल नागरोटा जम्मू एंड कश्मीर की छात्रा रही हैं। आपने NCC में प्रमाण पत्र की परीक्षा ए श्रेणी में उत्तीर्ण की है।

प्रथम सुपुत्र श्रीमती अंकिता - श्री अनीश दवे बैंगलोर ने कक्षा दसवीं की परीक्षा सी.बी.एस.ई बोर्ड से 95.6% प्राप्तांकों के साथ उत्तीर्ण की है। आप क्रिसलिस हायर सेकेंडरी स्कूल बैंगलुरू के छात्र रहे हैं आप स्कूल फुटबाल टीम में गोलकीपर है और अच्छे बैडमिंटन खिलाड़ी भी है अंतरराष्ट्रीय राजनीति में रुचि और अच्छी समझ के चलते आपने MUM (मॉडल संयुक्तराष्ट्र) में स्कूल का प्रतिनिधित्व करते हुए एक प्रतिनिधि की भूमिका निभाई थी।

अर्चन सुपुत्र श्रीमती नमीता - श्री आशीष भट्ट नवी मुंबई ने कक्षा दसवीं की परीक्षा आई.सी.एस.ई बोर्ड से 94% प्राप्तांकों के साथ उत्तीर्ण की है। आप नार्थ प्वांइट स्कूल नवी मुंबई के छात्र रहे हैं।

प्रांजली सुपुत्री श्रीमती पूजा-श्री पवन जोशी, भोपाल, ने कक्षा दसवीं की परीक्षा सी.बी.एस.ई. बोर्ड से 92.8% प्राप्तांकों के साथ उत्तीर्ण की है। आप मदर टेरसा स्कूल भोपाल की छात्रा रही हैं।

अंशुमान सुपुत्र श्रीमती नविता-श्री अनूप पंड्या, भोपाल, ने कक्षा दसवीं की परीक्षा सी. बी. एस. ई. बोर्ड से 92.8% प्राप्तांकों के साथ उत्तीर्ण की है। आप सागर पब्लिक स्कूल, कटारा - एक्सटेंशन भोपाल, के छात्र रहे हैं।

अनादि सुपुत्र श्रीमती शैली - श्री तन्मय दवे, भोपाल ने कक्षा दसवीं की परीक्षा सी. बी. एस. ई. बोर्ड से 92% प्राप्तांकों के साथ उत्तीर्ण की है। आप पी.एम. श्री केन्द्रीय विद्यालय - 2 शिवाजी नगर भोपाल के छात्र रहे हैं।

राघव सुपुत्र श्रीमती मीनल मेहता - श्री विरल पुजारी अहमदाबाद ने कक्षा दसवीं की परीक्षा सी.बी.एस.ई. बोर्ड से 92% प्राप्तांकों के साथ उत्तीर्ण की है। आप देहली वर्ल्ड पब्लिक स्कूल, कालावाड रोड राजकोट (गुजरात) के छात्र रहे हैं।

आरव सुपुत्र श्रीमती पूजा-श्री आलोक मेहता, भोपाल ने कक्षा दसवीं की परीक्षा सी.बी.एस.ई. बोर्ड से 91.8 % प्राप्तांकों के साथ उत्तीर्ण की है। आप सेंट जोसेफ को एड स्कूल, भोपाल के छात्र रहे हैं।

निवेदिता सुपुत्री श्रीमती दिशा - श्री नितिन भट्ट, हुबली कर्नाटक ने कक्षा दसवीं की परीक्षा सी.बी.एस.ई. बोर्ड से 91.6 % प्राप्तांकों के साथ उत्तीर्ण की है। आप केन्द्रीय विद्यालय हुबली की छात्रा रही हैं।

लिपि सुपुत्री श्रीमती तोषी -श्री विश्व भावन पंड्या भोपाल ने कक्षा दसवीं की परीक्षा सी.बी.एस.ई. बोर्ड ने 91.4 % प्राप्तांकों के साथ उत्तीर्ण की है। आप डी. पी. एस. भोपाल की छात्रा रही हैं।

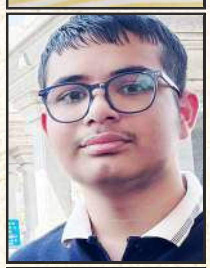

आरव सुपुत्र श्रीमती एकता-श्री अभिनव भट्ट, नोयडा ने कक्षा दसवीं की परीक्षा सी.बी.एस.ई. बोर्ड से 91.2 % प्राप्तांकों के साथ उत्तीर्ण की है। आप विश्व भारती पब्लिक स्कूल, अरूण विहार, नोयडा के छात्र रहे हैं।

अद्विता सुपुत्री श्रीमती अदिति दवे - श्री अनुराग पंडा बेंगलुरु ने कक्षा दसवीं की परीक्षा सी. बी. एस. ई. बोर्ड से 90% प्राप्तांकों के साथ उत्तीर्ण की है। आप डी.पी.एस.वाइट फील्ड, बेंगलुरु की छात्रा रही हैं।

शिवांश सुपुत्र श्रीमती नमिता - श्री प्रशांत भट्ट, बिलासपुर ने कक्षा दसवीं की परीक्षा सी.बी.एस.ई. बोर्ड से 88% प्राप्तांकों के साथ उत्तीर्ण की है। आप सेंट जेवियर स्कूल बिलासपुर के छात्र रहे हैं।

समाज के समस्त मेधावी छात्र/छात्राओं का हार्दिक अभिनंदन एवं भविष्य के लिये अनेकानेक शुभकामनाएँ

मध्य क्षेत्रीय गुजराती बाज खेड़ावाल समाज. शिक्षा समिति. मुख्यालय जबलपुर

भावपूर्ण श्रद्धांजलि

श्रीमती शशिकला दवे

(13.02.1934 - 01.06.2025)

She was an unusual Biography Which Generally Disregards Chronology

स्व. श्रीमती शशिकला दवे - स्मृति शेष

दिनांक - 01.06.2025
प्रातः 09:00 बजे

वही है शम्मा लेकिन रोशनी कम होती जाती है,
जैसे जिंदगी से जिंदगी कम होती जाती है।

आधुनिक मध्यप्रदेश के पूर्वज Central Provinces & Berar, राजधानी नागपुर, लॉ सेक्रेटरी स्व. श्री आर. जी. त्रिवेदी और स्व. श्रीमती सरस्वती देवी की ज्येष्ठ पुत्री, संयुक्त संचालक, स्कूल शिक्षा, स्व. श्री रमाकांत दवे की पत्नी, भोपाल स्थित लब्धप्रतिष्ठ फिजिशियन डॉ. हरिहर त्रिवेदी की बहिन, संयुक्त संचालक कृषि, स्व. श्री प्रदीप दवे एवं मध्यभारत के लब्धप्रतिष्ठ रोबोटिक एवं लेपेरोस्कोपिक सर्जन डॉ. संदीप दवे की माताश्री, मेरी पुत्री श्रीमती समिधा दवे एवं भान्जी श्रीमती ज्योति दवे की सासूमाँ एवं डॉ. शमिक दवे तथा डॉ. महक दवे की दादी श्रीमती शशिकला दवे का दिनांक 01.06.2025 को प्रातः 9:30 बजे देवलोक गमन हो चुका है। वीआईपी रोड (एयरपोर्ट रोड), रायपुर स्थित, पूरे का पूरा संदीप सदन एक अजीबो-गरीब सूनेपन के आगोश में जकड़ा हुआ है।

मार्च 2022 में अपने ज्येष्ठ पुत्र श्री प्रदीप दवे के असामयिक देहावसान के पश्चात वह अशक्त, क्षीणकाय किन्तु ममतामयी वाणीविहीन काया प्रतिदिन प्रातः व्हीलचेयर पर बैठे हुये अपने कक्ष की खिड़की से कदाचित उनकी प्रतिकृति को अनिमेश निहारा करती थी, और शाम को तुलसी माता तथा नारियल के पेड़ों के सानिध्य में कुछ अस्पष्ट स्वर और अविचल इशारों से आगंतुकों को पहचानने का असफल प्रयास किया करती थी। उनका खाली कक्ष, खाली पलंग, खाली व्हील चेयर, और समर्पित सेवादार मूक रहकर भी पूछ रहे हैं -

ऐ दोपहर की धूप बता क्या जवाब दूं, दीवार पूछती है साया किधर गया ?

विगत 2 वर्षो से शशिकला जी की सेहत के साथ आशा और निराशा बारी-बारी से आंख-मिचौली कर रही थीं। कभी Normal, **कभी** Mild, **कभी** Moderate, **कभी** Severe, **और कभी** Critical । **उनकी** Body Language **से अब लगने लगा था मानो वह कह रही हों -**

जिंदगी से बड़ी कोई सजा ही नहीं, और जुर्म क्या है ? ये पता ही नहीं

The mechanics of life defeats us because this **Inconsiderate Heart never signs any contract**. **अतः किसी चमत्कार की प्रत्याशा में दिनांक 29 मई से ही उनको प्राणवान बनाये रखने हेतु ऑक्सीजन पर रखा गया था। किन्तु** The riddle of destiny has not yet been solved by human beings, because that **ALMIGHTY** has his own calender. **और उसने** 13-02-1934 **को ही** 01-06-2025 **पर ✓ का निशान लगाकर रखा था -** For Shashikala's extra terestrial other worldly way of life. **इसी दिन प्रातः 09:00 बजे शशिकला जी ने महसूस किया कि - उधार की सांसों पर अब और जिया जाता नहीं । तभी** Life control tower **से** steady green signal **आया, जिसका तात्पर्य था -** The runway is clear, please takeoff - **और फिर उड़ गया कबूतर, छप्पर अकेला हो गया।**

A Master multitasker, without a formal job title, she was the backbone of a smoothly run household, the emotional anchor and the logistical planner of the family with an extraordinary strength that often goes unnoticed. Her formidable determination to limitless challenges, her powerful will, her unshaken belief in the rightness of her cause and astounding moral stamina saw her through her ordeal. She knew how to live, how to overcome and how to die with grace, courage, dignity and rare fortitude.

Shashikala ji - We may mourn your loss but we celebrate your life since **every exit is an entry somewhere else**. I am so gratefull for the time I had with you.

G.S. Mehta, Raipur

निविदा आमंत्रण सूचना
श्री सहकारी गृह निर्माण सह.संस्था मर्यादित, भोपाल

(पंजीयन क्रं. डी.आर.बी./284/1982)
पंजीकृत कार्यालय : रूम नं. 1, भूतल सामुदायिक भवन गुजराती कॉलोनी,
बावड़िया कलां, भोपाल-462039

दिनांक -14 जुलाई 2025

श्री सहकारी गृह निर्माण सहकारी संस्था मर्यादित, भोपाल द्वारा अपनी पंजीकृत भूमि खसरा क्रमांक 54/2 स्थित ग्राम बावड़िया कलॉ , गुजराती कालोनी, भोपाल में विकसित कालोनी के मात्र आवासीय प्रयोजन के भूखंड क्रमांक डी-2 (साऊथ फेसिंग, पार्क नं 4 के सेप्टिक टैंक के पास) के विक्रय हेतु, केवल बाज खेड़ावाल गुजराती समाज के नगर पालिका निगम, भोपाल के सीमा के निवासी तथा संस्था की पात्रता ग्रहण रखने वालों से सील बंद निविदाएं दिनांक 24.09.2025 को सांयकाल 5 बजे तक आमंत्रित की जाती हैं।

1. भूखंड का साईज लगभग 242 वर्ग मीटर हैं।
2. कलेक्टर गाइड लाईन रुपये 30000/- वर्ग मीटर हैं।
3. निविदाकर्ता के मांगने पर समिति दर फार्मेट व्हाट्सएप पर उपलब्ध करायेगी।
4. प्रतिभूति राशि रुपये 2,00,000/-(रुपये दो लाख) निविदा के साथ डिमांड ड्राफ्ट द्वारा जमा करना अनिवार्य होगा।
5. क्रेता/सफल निविदाकार को संस्था का सदस्य बनते हुए नियमों का पालन अनिवार्य होगा।
6. किसी भी निविदा को अमान्य/ निरस्त करने का अधिकार संस्था के पास सुरक्षित है। संस्था का ऑफसेट मूल्य 31,000/-वर्ग मीटर हैं।
7. किसी भी जानकारी के लिए निम्नलिखित मोबाइल नंबर पर केवल सुबह 11 से 2 बजे के बीच संपर्क कर सकते हैं।

   मो. नं. 9425009343, 9425373123

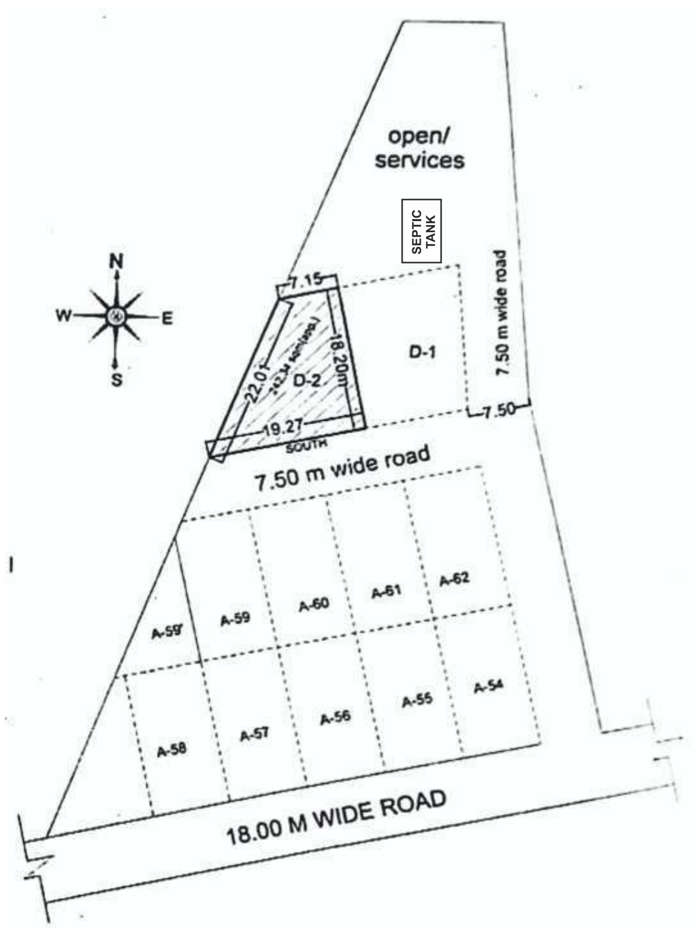

अध्यक्ष

श्री सह. गृह निर्माण सहकारी संस्था मर्यादित, भोपाल

मध्य क्षेत्रीय गुजराती बाज खेड़ावाल समाज.मुख्यालय जबलपुर

के दिवंगत आजीवन सदस्यों को सादर श्रद्धासुमन समर्पित

आ. सद. क्रं	-नाम	स्थान	आ. सद. क्रं	-नाम	स्थान
1	श्रीमती शीला ज्ञानशंकर सेलट	जबलपुर	45	श्री डॉ. वासुदेव बालकृष्ण दवे	भोपाल
2	श्री नवनीत एन. मंडलोई	बंगलुरू	48	श्री सुरेन्द्र पूनम चन्द्र धगट	जबलपुर
8	श्री रुद्र भाई मेहता	जबलपुर	53	श्री रमेश नारायण शंकर धगट	जबलपुर
9	श्री आनंद शंकर जय शंकर दवे	रायपुर	55	श्री एल.एस. मेहता	जबलपुर
10	श्री प्रभा शंकर प्रेम शंकर धगट	दमोह	56	श्री डॉ. कमल हरि शंकर दवे	कानपुर
12	श्री नरेन्द्र सोमनाथ त्रिवेदी	भोपाल	57	श्री एन.के. शुक्ल	चन्द्रपुर
13	श्री डॉ. प्रफुल्ल प्रेम शंकर धगट	सागर	60	श्री डॉ. रमेश शिव शंकर शुक्ल	जबलपुर
14	श्री डॉ. रमाकांत आर. दवे	जबलपुर	62	श्री जय शंकर दवे	सागर
15	श्री सुरेन्द्र एस. त्रिवेदी	वर्धा	61	श्री काशीनाथ ठाकर	शहडोल
17	श्री पुष्कर नाथ त्रिवेदी	अहमदाबाद	67	श्रीमती स्मिता दवे	न्यू दिल्ली
18	श्री प्रकाश चन्द्र जय शंकर दवे	रायपुर	69	श्री रमणीक भट्ट	गाडरवारा
20	श्रीमती शशिप्रभा इन्दु शंकर दवे	सागर	70	श्री अरुण भट्ट	ग्वालियर
22	श्री आनंद करुणा शंकर दवे	दिल्ली	72	श्री शम्भुनाथ जी दवे	हैदराबाद
23	श्री रमा शंकर बाबूलाल मेहता	जबलपुर	75	श्री राजकुमार ज्ञानशंकर सेलट	सतना
24	डॉ. उमा विजय शंकर दवे	सतना	76	श्री अभय नारायण शंकर भट्ट	सतना
25	श्री बालकृष्ण भवानी शंकर धगट	जबलपुर	81	श्री विनय व्यास	भोपाल
26	श्री कृपा शंकर डनायक	सतना	87	श्री नील भाई गिरजा शंकर मेहता	जबलपुर
28	श्री डॉ. गौरी शंकर सेलट	छिंदवाड़ा	89	श्री नारायण प्रेम शंकर डणायक	पन्ना
31	प्रफुल्ल सोमनाथ त्रिवेदी	हटा	94	श्री गोविंद शंकर ठाकर	ग्वालियर
32	श्री कृष्णकांत रामशंकर भट्ट	जबलपुर	95	श्री शरद कुमार गौरी शंकर पंड्या	जबलपुर
33	श्री प्रभा शंकर त्रिवेदी	मुंबई	98	श्री शशि कांत दवे	भोपाल
34	श्री गोविंद शंकर रेवा शंकर दवे	भोपाल	99	श्री ज्ञानशंकर जयशंकर दवे	रायपुर
38	श्री अजीत उमा शंकर धगट	रायपुर	101	श्रीमती सविता उमा शंकर पंड्या	जबलपुर
39	श्री जस्टिस मनोहर भट्ट	इंदौर	103	डॉ. अतुल कुमार शुक्ल	खण्डवा
40	श्री प्रवीण मेहता	भोपाल	106	श्री हरिहर कृपाशंकर भट्ट	जबलपुर
42	श्री अशोक दवे	भिलाई	107	श्री रमा शंकर मेहता	नागपुर
43	श्री श्रीकृष्ण सेलट	भोपाल	111	श्री श्रीकांत नारायण शंकर मेहता	रायपुर
44	श्री प्रसन्न करूणा शंकर दवे	दिल्ली	112	श्री प्रियनाथ शिवनाथ मेहता	भोपाल

आ. सद. क्रं	-नाम	स्थान	आ. सद. क्रं	- नाम	स्थान
113	श्री मणीकांत कृपा शंकर मेहता	रायपुर	206	श्री नारायण चंद्र सोमनाथ त्रिवेदी	दुर्ग
114	श्री सुधीर सुरेन्द्रनाथ मेहता	वड़ोदरा	211	श्री विनय कुमार भट्ट	इंदौर
119	श्री एस.बी. त्रिवेदी	झाँसी	214	श्री गोपाल शंकर ठाकर	सिकंदराबाद
120	श्री कृष्ण कुमार दवे	भोपाल	216	श्री कृष्ण कांत त्रिवेदी	जबलपुर
122	श्री जे.एस. मेहता	भोपाल			
123	श्री हरी शंकर दवे	भोपाल	229	श्री अशोक श्रीनाथ मेहता	कोलकता
126	श्री अशोक रेवाशंकर दवे	चन्द्रपुर	237	श्री प्रदीप आर.के.दवे	रायपुर
129	श्रीमती मनोरमा त्रिवेदी	जबलपुर	247	डॉ. ऋषि ए. जोशी	जबलपुर
131	श्री दुर्गाशंकर दवे	रायपुर	252	श्री मुकुन्द लाल सेलट	वाराणसी
136	श्रीमती अमिता आर जोशी	मुंबई	254	श्री गिरजा शंकर विष्णुशंकर सेलट	वाराणसी
137	श्री बालकृष्ण मेहता	विंध्य नगर	257	श्री सुधीर जय शंकर दवे	भोपाल
140	श्री कृष्ण कुमार धगट	भोपाल	259	श्री राजेन्द्र रामनाथ शुक्ल	जबलपुर
143	श्री डॉ.वी.एस.तिवारी	नर्मदापुरम	267	श्री अनिल अम्बाशंकर सेलट	भोपाल
146	श्री प्रकाश कुमार मेहता	नागपुर	272	श्री राम कृष्ण एल.एस. पंड्या	न्यू दिल्ली
151	श्री अशोक जयशंकर शुक्ल	ग्वालियर	280	श्री योगेश रामेश्वर त्रिवेदी	नागपुर
155	श्री राजीव शंकर मेहता	जबलपुर	286	श्री डॉ. संजय प्रफुल्ल दवे	भोपाल
156	श्री मुरलीधर जोशी	वाराणसी	297	श्री मोहन काशीनाथ भट्ट	भोपाल
159	श्री समीर सुरेन्द्र शंकर सेलट	जबलपुर	305	श्री विनोद शंकर मेहता	जबलपुर
161	सुश्री माधुरी बेन दवे	जबलपुर	306	श्रीमती वंदना अरुण दवे	सागर
162	श्री प्रदीप नारायणशंकर मेहता	नागपुर	314	श्री राजुल डणायक	पूणे
163	डॉ.प्रफुल्ल मणी शंकर मेहता	जबलपुर	324	श्री पी.एस. पंड्या	नागपुर
168	श्री डॉ. हरिकृष्ण रामकृष्ण मेहता	मोदीनगर	332	श्री हरि कृष्ण मेहता	दमोह
169	श्री डॉ. वीरेन्द्रकुमार पुरुषोत्तम मेहता	जबलपुर	342	श्रीमती गीता हरिहर त्रिवेदी	भोपाल
174	श्री संतोष कुमार गुलाबशंकर धगट	भिलाईं	354	श्री वंदन उमाशंकर धगट	भोपाल
178	श्री अनिल कृष्णा शंकर पंड्या	नर्मदापुरम	356	श्री अनूप ज्ञान शंकर दवे	जबलपुर
181	श्री माधव भाई धगट	जबलपुर	360	श्री महेन्द्र त्रिवेदी	दुर्ग
182	श्री अतुल मणीशंकर मेहता	रायपुर	367	श्री आर.बी.मेहता	उज्जैन
183	श्री विजय केशवराम पंड्या	भोपाल	376	श्रीमती संगीता प्रवीण पंड्या	दमोह
198	श्री प्रकाश रतनशंकर पंड्या	जबलपुर	383	श्री रवीन्द्र रामशंकर भट्ट	ग्वालियर
201	श्री श्यामशंकर रामलाल पंड्या	ग्वालियर	384	डॉ. मनोहर रामचन्द्र सेलट	भिलाई
202	श्री सतीश बालाजी भट्ट	जबलपुर	411	श्री एच. के. दवे	दमोह
204	श्री प्रकाश नारायण शंकर धगट	जबलपुर	428	श्रीमती अर्चना राजीवकृष्ण जोशी	जबलपुर

आ. सद. क्रं - नाम		स्थान	आ. सद. क्रं - नाम		स्थान
458	डॉ. उषा पंडा	जबलपुर	748	श्री योगेन्द्र कुमार पंड्या	दमोह
459	श्री विकास श्रीकांत भट्ट	दुर्ग	771	श्री अलय दवे	भोपाल
484	श्री भावदत्त त्रिवेदी	जबलपुर	785	श्री संतोष नारायण शंकर पंड्या	जबलपुर
529	श्री डॉ. संतोष दवे	दमोह	794	श्रीमती कमला गोपीकृष्ण धगट	भोपाल
534	श्री राजीव प्राणशंकर मेहता	बिलासपुर	799	श्री कृष्ण कुमार मेहता	गांधीनगर
539	श्रीमती मंजुला चंद्रकांत भट्ट	भिलाई	823	श्री राकेश पंड्या	रायपुर
547	श्री भूपेन्द्र रामचंद दवे	जबलपुर	841	श्री ईश्वर चंद धगट	दमोह
557	श्री श्याम शंकर जोशी	जबलपुर	848	श्री अमित रमणलाल भट्ट	जबलपुर
559	श्री अरविंद भट्ट	शहडोल	849	श्री लक्ष्मीकांत दवे	दमोह
560	श्रीमती ज्योति अरविंद भट्ट	शहडोल	858	श्री अरविंद कुमार सेलट	जबलपुर
570	श्री सचिन ज्ञानशंकर शेलत्	जबलपुर	873	श्री केशवराम पंड्या	दमोह
629	श्री उमा शंकर पंड्या	न्यू दिल्ली	886	श्री बद्रीनाथ मेहता	जबलपुर
630	श्री नवीन अम्बादत्त भट्ट	मुंगेली	890	श्रीमती मंजुला भट्ट	जबलपुर
662	श्री मुकेश प्रभाशंकर भट्ट	जबलपुर	938	श्री कृष्ण कुमार भाईशंकर पंड्या	जबलपुर
736	श्री संतोष अनंत राम दवे	भोपाल	950	श्रीमती मधु गौतम दवे	जबलपुर
744	श्री पीयूष कुमार शुक्ल	नैनी इला.	967	श्रीमती दीपशिखा अमित दवे	भोपाल
			987	श्री आनंदकांत वासुदेव भट्ट	उज्जैन

नोट – उपरोक्त सूची मध्य क्षेत्रीय समाज के दिवंगत सदस्यों की है जो उन्हें सादर श्रद्धांजलि देने यहाँ प्रकाशित की गई है। ऐसे दिवंगत सदस्य जिनके नाम इस सूची में नहीं हैं, उनसे संबंधित परिजन उनकी जानकारी भविष्य के प्रकाशन के लिए **(उनका नाम सदस्यता क्रमांकः निवासरत नगर का नाम)** हमें अवश्य प्रदान करें। नियमानुसार **'समाज '** की सदस्यता, सदस्य के दिवंगत होते ही स्वमेव समाप्त हो जाती है और उन सदस्यों को संगठन से प्राप्त होने वाली सुविधा – सूचना /पत्रिका आदि भेजना स्वतः बंद हो जाता है। और यह अपडेट निरंतर चलता रहता है। अस्तु पत्रिका आदि की प्राप्ति के लिए इनसे संबंधित परिजनों में से किसी अन्य व्यक्ति को **'समाज '** की सदस्यता लेनी चाहिए। इस बावत हम आपसे सहयोग की अपील करते हैं।

सुधीर पंड्या 'सचिव' मो.नं.– 9826676077

सूचना 'समाज' की वेबसाईट में उल्लेखित आजीवन सदस्यता सूची व टेलीफोन डायरेक्टरी में नाम पता, फोन नंबर ई. मेल आदि जोड़ने व सुधार कार्य निरंतर चलता रहता है। इस बाबत वेबसाईट की इन साईट पर उल्लेखित फारमेंट के अनुसार जानकारी बनाकर श्री दीपक गजानंद भट्ट जबलपुर (कार्यकारिणी सदस्य) को उनके वाट्सएप नंबर 9301820651 पर भेजें।

भूल सुधार– जनवरी–अप्रैल 2025 अंक के पृष्ठ 33 पर प्रकाशित युवा–परिचय चि. हर्षित भट्ट के जन्म स्थान के कॉलम में जबलपुर प्रकाशित है। उसे जबलपुर के स्थान पर जगदलपुर पढ़ा जावे। इसी तरह पृष्ठ 32 पर चि. दीपांश भाई पंड्या की जन्म कुंडली में नक्षत्र– स्वाति प्रकाशित है। उसे नक्षत्र विशाखा पढ़ा जावे।

सचिव–मध्य क्षेत्रीय गुजराती बाजखेड़ावाल समाज
मुख्यालय जबलपुर

स्मृतियाँ

माता-पिता की जीवन गाथा

माता-पिता का जीवन कितना संघर्षमय होता है। इस पर यदि हम बहुत शांति और संयम से विचार करे तो हम पायेंगे कि हमें उनके जीवन-संघर्ष से कितनी सुख-शांति, सुविधा और प्रेरणा प्राप्त हुई और उन्हें हम अपने जीवन में कितना अपना पाये? अस्तु यहाँ पर मैं अपने माता - पिता के जीवन को गाथा के रूप में इस लेख द्वारा प्रस्तुत कर रहा हूँ।

हमारे पिताश्री का जन्म 27.05.1915 को जबलपुर में निवासरत् श्री गोविंद शंकर जी भट्ट एवं श्रीमती गोदावरी देवी के परिवार में हुआ। हमारे पिताश्री को मिलाकर वे आठ भाई-बहन थे। पाँच भाई और तीन बहनें थीं। हमारे दादा जी उस समय परफेक्ट पाटरी, ग्वारीघाट रोड़ जबलपुर में लेखा संबंधी कार्य देखते थे, और दादी जी घरेलू महिला थी । दादा जी का विवाह बनारस में जोशी जी के यहाँ हुआ था। दादा जी का जब निधन हुआ उनकी आयु 84 वर्ष की थी, तथा दादी का निधन दादा जी की मृत्यु के ही आस-पास एक महामारी के दौरान हुआ। मेंने अपने दादा -दादी को नहीं देखा परंतु उनके बारे में सुना है।

हमारे पिता जी लज्जा शंकर भट्ट ने उस समय बी.ए.एल.एल.बी. के साथ आयुर्वेद बायोकेमिक की शिक्षा भी प्राप्त की और साथ ही उनका झुकाव संगीत की ओर भी था। वे शास्त्रीय संगीत के साथ-साथ बांसुरी, सितार और वायलिन बजाते थे। हमारे पिताश्री का विवाह दमोह निवासी श्री नारायण शंकर धगट एवं श्रीमती इंदिरा धगट की सुपुत्री सरोज धगट से हुआ था। हमारी माताजी को मिलाकर इस परिवार में कुल ग्यारह भाई बहन थे। जिसमें छः भाई, और पाँच बहनें थीं । हमारी माता जी ने दसवीं तक शिक्षा अंग्रेजी माध्यम से की। वे सितार बजाती थीं साथ ही बैडमिंटन भी खेलती थीं।

उपरोक्त सामान्य विवरण के पश्चात् अब मैं अपने माता-पिता के जीवन संघर्ष के विषय में चर्चा करूँगा हमारे माता-पिता की पाँच संतान थीं। जिसमें तीन पुत्र व दो पुत्रियाँ थी। जिसमें अभी शेष दो पुत्र व एक पुत्री जीवित हैं। हमारा परिवार अर्थात् हमारे माता-पिता गोलबाजार, जबलपुर स्थित घर में संयुक्त परिवार में रहते थे। संयुक्त परिवार में रहते हुये उन्होंने काफी जिम्मेंदारी का निर्वहन किया तथा समझौते भी किये । उस दौर में भारत की स्वतंत्रता का आंदोलन चल रहा था। हमारे पिताजी के बड़े भ्राता श्री लक्ष्मीशंकर गोविंद शंकर भट्ट एवं अन्य सदस्य पूरी तरह से स्वतंत्रता के संघर्ष में भाग ले रहे थे। पिता जी भी सक्रिय रूप से अपने बड़े भ्राता को बचाने के लिये जेल गये। इसी दौरान उन्होंने अपनी वकालत पर से ध्यान देना कम कर दिया। स्वतंत्रता के पश्चात् परिवार की जिम्मेदारी और आर्थिक परेशानियों के कारण अंततः हमारे माता-पिता को संयुक्त परिवार से अलग होना पड़ा व 44 वर्ष की उम्र में उनको वकालत छोड़ कर नौकरी करनी पड़ी। विद्युत मंडल जबलपुर में विधि - सलाहकार के रूप में आपने अपनी सेवायें प्रदान की। उनका साथ हमारी माताजी ने भी अच्छी तरह से दिया। अर्थात् विपरीत परिस्थितियों में भी उन दोनों ने अपना शांत स्वभाव, सौम्यता, संघर्ष शीलता, धैर्य नहीं छोड़ा और हम पाँच भाई बहनों को उच्च शिक्षा, अच्छा लालन-पालन, और संस्कार देने में कोई भा कसर नहीं छोड़ी । हमारे माता-पिता ने दोनो पक्षों की (हमारे दादी-दादा पक्ष नाना नानी पक्ष) जिम्मेदारियों में भी समय-समय पर योगदान दिया। दोनों के विनम्र स्वभाव के कारण उन्हें नानी पक्ष में बहुत सम्मान मिला।

मध्यप्रदेश विद्युत मण्डल में 62 वर्ष की आयु तक सेवा देने के पश्चात् उन्होंने अपनी वकालत पुनः शुरू की और वे रामपुर स्थित स्वयं के घर से ऑटो में रोज सुबह गोलबाजार वाले घर जाते, वहीं पर उन्होंने अपना कार्यालय बनाया व वहीं से वकालत का काम करते थे। वे नवरात्री में सभी दिन समाज के गरबा आदि कार्यक्रमों में भी भाग लेते थे। हमारे पिता का देहांत सन् 1981 में हुआ और हमारी माता का देहांत सन् 1985 में हुआ। उनके जाने के बाद हमारे जीवन में उनकी यादें और उनके द्वारा दिये शिक्षा-संस्कार को ग्रहण करते हुए हम अपने जीवन को सुचारूरूप से चला रहे हैं। आज भी मेरा मानना है कि माता-पिता के दिये संस्कार उनके बच्चों में जरूर आते हैं और उनके दिये हुए आशीर्वाद से ही हम अपने जीवन का सफलता पूर्वक निर्वाह करते हैं।

आलेख- कपिल भट्ट, रायपुर

पुण्य स्मृति

स्व. श्री रामशंकर भट्ट
आत्मज - स्व. डॉ. श्री गणेश राम भट्ट
जन्म - 24 सितम्बर 1925
पुण्यतिथि - 25 फरवरी 1997

स्व. श्रीमती विद्यावती भट्ट
आत्मजा - स्व. श्री मुकुंदराम दवे
जन्म - 18 अप्रैल 1932
पुण्यतिथि - 4 मई 1967

भावपूर्ण श्रद्धांजली

हम सभी परिवारजनों की ओर से सादर श्रद्धांजली

विनयावत्

सौ. इन्दू - वीरेश त्रिवेदी,
सौ. अलका - अश्विनी मेहता

अनिल - सौ. छाया भट्ट
संजय - सौ. दीपा भट्ट

पता :- ए-246, शाहपुरा कॉलोनी, भोपाल, पिन कोड :- 462039 , मो. : 9893566406

पुण्य स्मृति

स्व. श्री नारायण सोमनाथ दवे
देवलोकगमन
12 मई 1984

स्व. श्रीमती सवित्री दवे
देवलोकगमन
23 फरवरी 1983

हमारे पूजनीय माता-पिता का स्मरण और आर्शीवाद सदैव हम सभी के साथ रहा हैं और रहेगा। उनके दिए संस्कारों, शिक्षा और जीवन शैली को आत्मसात कर हम प्रतिदिन उन्हें पूर्ण आदर के साथ स्मरण करते हैं।

हम उन्हें अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।

श्रद्धावनत

सुधा निरंजन दवे, लेखा शरद दवे
श्याम एवं शकुन भट्ट,
रमेश एवं अलका दवे

सुभाष एवं सुनीता दवे, प्रतिमा शशिकांत व्यास
अजय एवं अनुराधा पंड्या
एवं समस्त परिवार

17 अरण्य विहार, मनोरिया अस्पताल के पास, चूना भट्टी, भोपाल म.प्र.

विनम्र श्रद्धांजलि

स्व. श्री प्रमोद कुमार पंड्या

देवलोकगमन
29.12.2006

स्व. श्रीमती शशिबाला पंड्या

देवलोकगमन
26.09.2018

:: विनयावत् ::

डॉ. सुनील पंड्या (पुत्र)
श्रीमती मंजरी पंड्या (पुत्रवधू)
शिवांक पंड्या (पौत्र)

प्रज्ञा -समीर भट्ट (पौत्री-दामाद)
इरा भट्ट (प्रपौत्री) रूद्र भट्ट (प्रपौत्र)

पंखुरी -समीर मेहता (पौत्री-दमाद)
स्पर्श मेहता (प्रपौत्र)

एच आई जी -8, सोनागिरी, रायसेन रोड, भोपाल (म.प्र)
पिनकोड -462022/मो.नं.9302159789

श्रद्धांजली

स्व. श्री अरुण कुमार पंड्या

देवलोक गमन -22/07/2019

आपके चरणों में शत-शत नमन

आपका स्नेह, प्रेरणा एवं सरलता अविस्मर्णीय है।
आपके सिद्धांत एवं विचार सदैव हमारा मार्गदर्शन करते रहेंगे।

:: विनयावत् ::

श्रीमती किरण पंड्या

पंकज-शीतल पंड्या
प्रबोध-अर्चना पंड्या
अंश पंड्या एवं शुभि पंड्या

श्री उदय पंड्या

उमेश -अंशु पंड्या
अनन्या एवं अन्वेषा पंड्या
वीरेन्द्र -निधि पंड्या
हर्षिल पंड्या

पूर्वी - अरविंद धगट (सपरिवार), विथिका-नितिन धगट (सपरिवार),
विजया -अवनीश दवे, प्रीती-अपूर्व त्रिवेदी (सपरिवार)

डुप्लेक्स-10, सागर कुंज, बीमा कुंज पेट्रोल पंप के सामने,
कोलार रोड, भोपाल (म.प्र.) -462042
मो.नं. 9893274472,9406568822

भावपूर्ण श्रद्धांजलि

स्व. डॉ. प्रभाशंकर दवे
आत्मज स्व. काशीबाई
स्व. मुकुंदराम दवे
11.10.1921-03.07.2000

स्व. श्रीमती गायत्री दवे
आत्मजा स्व. कृष्णा
स्व. चुन्नीलाल दवे
12.12.1931-15.12.2020

आपके स्नेहाशीष से सराबोर परिवार की ओर से भावपूर्ण श्रद्धांजलि

:: विनयावत् ::

हृदयनाथ मेहता
डॉ. शुभा-पराग दवे
हिमानी दवे
आदित्य दवे
जया-शशांक धगट
कार्तिक धगट

किरण विकास भट्‌ट
अपूर्व भट्‌ट

शशि-हर्षवर्धन टेंभुर्णीकर
स्मृति-मंदार मराठे
ऋत्वी मराठे
विधि-राज टिगडानिया

डॉ. वंदना-डॉ. अरूण दवे
प्रणति-वरूण दवे
नैनिका दवे, निशांक दवे,
डॉ. अंकिता-
डॉ. अंकुर श्रीवास्तव
अथर्व श्रीवास्तव

बी-67, अलकापुरी, भोपाल म.प्र. पिनकोड - 462024/मो. 9425604324

सादर नमन

LATE SMT. VIDYAVATI MEHTA (BHOPAL)

15.09.1919 -24.02.2012

:: विनयावत् ::

Vibha Dave-Vinay Dave
Manisha Chauhan-Kartik Chauhan

Sushma Mitra-Dilip Kumar Mittra
Niharika -Sanjay Sharma (Retd. ED CSEB)
Neeraj Mittra- Ruchi Mittra
Nitika Ghosh - Brig. Sanjay Ghosh

Alka Pravin Mehta
Sumit-Anuradha Mehta
Gunjan-Sandeep Pandya

Add-21, APSARA COMPLEX, INDRAPURI, BHOPAL-462022

सादर नमन

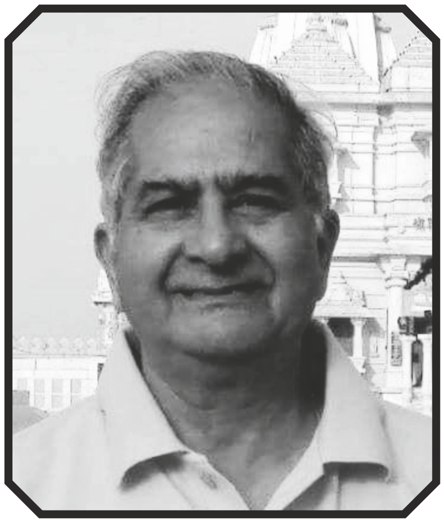

LATE SHRI PRAVIN MEHTA (BHOPAL)

17.06.1947- 07.12.2016

:: विनयावत् ::

SMT. ALKA MEHTA

Sumit Mehta-Anuradha Mehta
Son-Daughter-in Law
Soumya & Siddhant
Grand Daughter and Son

Gunjan Pandya-Sandeep Pandya
Daughter-Son-in Law
Stuti Pandya (Grand Daughter)

ADD-21, APSARA COMPLEX INDRAPURI
BHOPAL-462022

विनम्र श्रद्धांजलि

स्व. श्री चन्द्रशेखर बल्देव शंकर पंड्या एवं संयोगिता पंड्या

जन्म 07.09.1918
निर्वाण 27.04.1991

जन्म 21.03.1926
निर्वाण 12.01.2012

शत् शत् नमन्

:: विनयावत् ::

नीलिमा अजीत पंड्या
वर्षा एवं नितिन सेलट (नई दिल्ली)
रितु एवं धर्मेश भट्ट (दुबई)
मेघा एवं करणी सिंह अरहा

आलोक पंड्या
प्राची एवं रोहित पंड्या (पुणे)
क्षितिज एवं अंशिका पंड्या (केनेडा)

अनूप पंड्या - वंदना पंड्या, अंकित एवं कृति पंड्या (गुरुग्राम)
प्रेक्षा एवं गौरव कुलकर्णी (पुणे)

ए-39, गुजराती कालोनी, तिलक नगर के पास,
बावड़िया कला, भोपाल म.प्र., मो. नं. 9425009343

पुण्य स्मृति

स्व. श्री प्रमोद शंकर प्रेम शंकर पंड्या
जन्म 26.06.1926
निर्वाण 03.08.2014

स्व. श्रीमती सुनीता प्रमोद शंकर पंड्या
जन्म 06.03.1934
निर्वाण 21.01.2019

हम सभी उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं...

आभा - प्रदीप धगट, अखिलेश - वीणा पंड्या,
अनिमेष - अलका पंड्या, मिलन पंड्या तथा
श्वेता, प्रणव, अर्पित, अदिति, इशिता, अवनी, गुंजन,
ईशान तथा आरना, नायसा, कैरवी एवं मास्टर अव्यान, बैबी नितारा

जी-2/252, गुलमोहर कालोनी, भोपाल (म.प्र.)
पिनकोड - 462039/ मोबाइल - 9425373123

सादर नमन

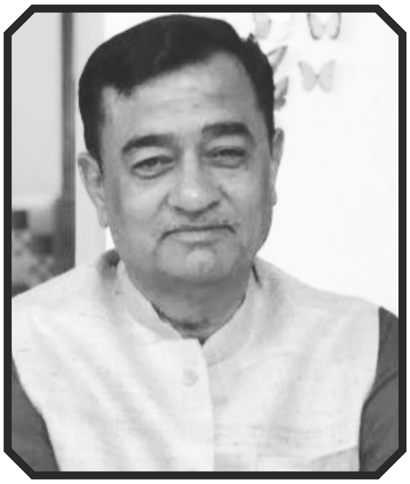

स्व. वंदन कुमार धगट भोपाल

देवलोकगमन

20.12.2023

:: विनयावत् ::

श्रीमती निशा धगट

राधिका-निमित धगट
आयांश एवं धीर

ऋचा-अर्पित पंड्या
नायसा एवं नितारा

31,द ग्लोबस फेब सिटी,चूना भट्टी, भोपाल -16

श्रद्धा–सुमन

स्व.श्री राम चंद्र गौरीशंकर दवे
(अधिवक्ता) नागपुर
जन्म -1909,
देहावसान : 25.08.1965

स्व. श्रीमती लक्ष्मीबाई दवे
जन्म -21.03.1921
देहावसान : 01.08.2009

श्रद्धानवत

दवे परिवार-छिंदवाड़ा बिलासपुर,दमोह,
सौजन्य से - खेड़ावाल गुजराती ब्राह्मण मंडल, बिलासपुर (छ.ग.)

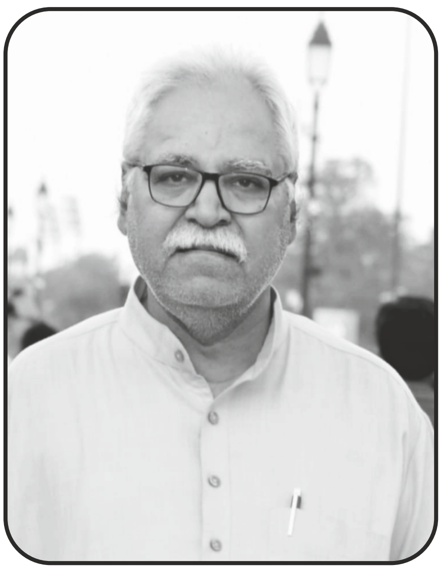

प्रथम पुण्यतिथि

भावपूर्ण श्रद्धांजली

स्व. श्री राजकुमार ज्ञानशंकर सेलट

बैकुंठवासः 24.09.2024

नैंन छिन्दन्ति शस्त्राणि नैंन दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्तयापो न शोषयति मारुतः।
निर्वाण से प्रबुद्ध हुए, अद्वैत को प्राप्त,
आपका मार्गदर्शन, प्यार, अपनत्व और संरक्षण
हर क्षण याद आता है।

हम सभी परिवारजनों की ओर से सादर श्रद्धांजली

वसुधा सेलट (पत्नी), अभिनव सेलट-ऋचा सेलट (पुत्र-पुत्रवधु), शिवांगी सेलट (पुत्री),
सात्विक सेलट (पौत्र) एवं समस्त सेलट परिवार (सतना-भोपाल)

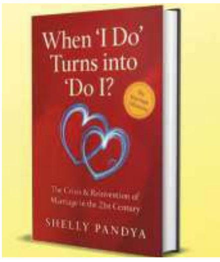

पुस्तक विवेचना

Shelly Pandya Author of When I Do Turn into Do I?" - The Crisis & Reinvention of Marriage in the 21st Century"

एक नई सोच,एक संतुलित दृष्टिकोण - रिश्तों पर केंद्रित अधिवक्ता शैली पंड्या की नवीनतम (पुस्तक के संबंध में) अधिवक्ता शैली पंड्या द्वारा लिखित यह पुस्तक विवाह और संबंध, आधुनिक जीवन की भागदौड़ भावनात्मक पेचीदगियों और सामाजिक बदलाव के बीच रिश्तों के बदलते स्वरुप की गहराइयों में उतरती है। पूरी तरह से निष्पक्ष और बिना किसी लैंगिक पूर्वाग्रह के।

इस पुस्तक में क्या मिलेगा आपको :

- पुरुषों और महिलाओं दोनों की चुनौतियों का समावेशी विश्लेषण.
- हर पीढ़ी में रिश्तों की बदलती परिभाषा और उसकी मनोवैज्ञानिक पड़ताल.
- लड़कियों और महिलाओं की उभरती भूमिका के साथ पुरुषों के भावनात्मक दबावों को भी समझने का प्रयास.
- कानून, समाज और व्यक्ति के बीच रिश्तों की उलझनों पर ठोस उदाहरणों के माध्यम से प्रकाश.
- एक ऐसा दृष्टिकोण जो केवल सुधार की बात नहीं करता बल्कि भावनात्मक और सामाजिक समझ का मार्ग भी दिखाता है.

क्यों पढ़ें यह किताब

क्योंकि यह टकराव नहीं, संवाद को प्राथमिकता देती है।

क्योंकि इसमें महिलाओं के सशक्तिकरण के साथ – साथ पुरुषों की भूमिका, जिम्मेदारियाँ और संघर्ष भी पूरी संवेदनशीलता से समाहित हैं और क्योंकि यह हर उस व्यक्ति के लिए है जो रिश्तों की आत्मा को बचाए रखते हुए परिवर्तन को अपनाना चाहता है।

यह सिर्फ एक किताब नहीं – यह आधुनिक समाज में रिश्तों की नई व्याख्या है, एक ऐसा आईना जिसमें पुरुष और महिला दोनों अपना प्रतिबिंब देख सकते हैं। यह पुस्तक हर उस व्यक्ति के लिए है, जो सामाजिक बदलाव में अपनी भूमिका को समझना और संवेदनशील दृष्टिकोण अपनाना चाहता है।

लेखिका परिचय

अधिवक्ता शैली पंड्या मुंबई और नवी मुंबई में प्रैक्टिस करने वाली एक अनुभवी वकील हैं। वर्षों से उन्होंने जटिल कानूनी मामलों को सुलझाने में विशेषज्ञता हासिल की है, विशेष रूप से वैवाहिक और सामाजिक मुद्दों में। उनकी कार्यशैली में कानूनी कठोरता के साथ–साथ सहानुभूतिपूर्ण समझ का सुंदर संतुलन देखने को मिलता है। कानून के क्षेत्र से परे, शैली समाज में हो रहे बदलावों, पीढ़ियों दृष्टिकोण और संबंधों की बदलती प्रवृत्तियों की गहरी पर्यवेक्षक हैं।

सहिष्णुता, स्वीकृति और आपसी सम्मान को बढ़ावा देने की उनकी गहरी रुचि ने उनके लेखन को प्रभावित किया है, जिससे वे कानून, दर्शन और मानवीय भावनाओं के बीच की खाई को पाटने में सक्षम हुई हैं। उनकी पुस्तक आधुनिक रिश्तों पर एक प्रभावशाली दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है, जिसमें कानूनी अवधारणाओं, मनोवैज्ञानिक विश्लेषण और वास्तविक जीवन की कहानियों का बुद्धिमत्तापूर्ण मिश्रण है। उनका उद्देश्य लोगों को शिक्षित करना, स्वस्थ संबंधों की दिशा में प्रेरित करना और आवश्यक कानूनी सुधारों के लिए आवाज उठाना है। शैली पंड्या एक कानूनी विशेषज्ञ और विचारशील नेता के रूप में अपना स्थायी प्रभाव छोड़ती जा रही हैं, जो पाठकों और मुवक्किलों को स्पष्टता, समाधान और सूचित निर्णयों से परिभाषित भविष्य की ओर मार्गदर्शन करती हैं।

(गतांक से आगे)

श्री हनुमान चालीसा

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा।
विकट रूप धरि लंक जरावा ।।9।।
भीम रूप धरि असुर सँहारे।
रामचन्द्र के काज सँवारे ।।10।।

यहाँ श्री तुलसीदास जी ने एक महत्त्वपूर्ण संकेत दिया है, जिस पर हम सभी को विशेष रूप से ध्यान देना चाहिये। श्री सीता जी शांति स्वरूपा जगत् जननी है। शांति प्राप्त करने का एक मात्र उपाय है अपने अहम् (Ego) को त्याग कर छोटे से भी छोटा बन जाना। जब तक हम अपने आपको एक अलग सत्ता या एक अलग अस्तित्व समझते रहेंगे तब तक नित्य या परम शांति नहीं मिल सकती। श्री सीता जी भगवान् श्री राम से अभिन्न हैं। इसलिए ईश्वर और शांति दो अलग-अलग स्थितियाँ नहीं हैं, दोनों एक हैं। इन्हें पाने के लिए एकमात्र उपाय है अपने अहम् का (Ego) का त्याग करना।

हमारे अंदर बाह्य जगत् के प्रति जो आकर्षण है, तृष्णा है, उसी का नाम लंका है। इसलिए उसे सोने की लंका कहा जाता है। अपने अंदर विद्यमान भौतिक वस्तुओं के प्रति तृष्णा को समाप्त करना इतना सरल नहीं है। इसके लिए दृढ़ इच्छा शक्ति और तप बल की आवश्यकता होती है। श्री हनुमान जी का बहुत विशाल हृदय था तभी वे तृष्णा स्वरूप लंका को जला सके।

अपने अंदर आसुरी प्रावृत्तियाँ भरी पड़ी हैं जो समय-समय पर अनुकूल अवसर देखकर प्रकट हो जाती हैं। इन दुष्प्रवृत्तियों का संहार करने के लिए अत्याधिक मानसिक बल की आवश्यकता होती है। श्री हनुमान जी असुरों का संहारे करने वाले हैं। वे जिस पर कृपा करते हैं वह अपने आन्तरिक दुष्प्रवृत्तियों से छूट जाता है। इस प्रक्रिया को ही 'राम कार्य' कहा जाता है। गीता में भगवान् ने स्पष्ट रूप से अपने कार्य का उल्लेख इस प्रकार किया है -

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्म संस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ।।4-8।।

साधु पुरुषों का उद्धार करने के लिए और पाप कर्म करने वालों का विनाश करने के लिए तथा धर्म की स्थापना के लिए मेरा कार्य सतत चलता रहता है। अन्तर्यामी ईश्वर की प्रेरणास्वरूप यह कार्य हम सबके अंदर भी निरंतर चलता रहता है, चाहे हम जाने या न जाने।

लाय संजीवन लखन जियाये।
श्री रघुबीर हरषि उर लाये ।।11।।
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई।
तुम मम प्रिय भरतहिं सम भाई ।।12।।

इन्द्रियों की अदमनीय शक्ति से जब वैराग्य घायल हो जाता है। तब प्राण शक्ति की सहायता से ही उसे पुनर्जीवित करना पड़ता है। बिना वैराग्य के आत्म ज्ञान नहीं हो सकता। श्री हनुमान जी द्वारा संजीवनी बूटी लाकर श्री लक्ष्मण जी की मूर्छा दूर करना इसी तथ्य की ओर संकेत है। जब हम प्राण शक्ति के द्वारा इन्द्रिय संयम करते हैं तभी परमात्मा हमारे हृदय में प्रकट होते हैं। कोई भी सफलता बिना तप किये नहीं मिलती। इसके लिए इन्द्रिय सुख का त्याग करना पड़ता है।

श्री हनुमान जी और श्री भरत जी दोनों इस तप, त्याग और संयम के साक्षात् उदाहरण है। इसके फलस्वरूप ही भगवान् हम पर प्रसन्न होते हैं और अपने हृदय से लगा लेते हैं। भगवान् की प्रियता प्राप्त होना जीवन की सबसे बहुमूल्य उपलब्धि है।

सहस बदन तुम्हरों जस गावैं।
अस कहि श्रीपति कण्ठ लगावैं ।।13।।
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा।
नारद सारद सहित अहीसा ।।14।।

जब कोई साधक ईश्वर को प्रिय हो जाता है, ईश्वरमय हो जाता है, तब उसका यश चारों तरफ अपने आप फैलता है। श्रीपति द्वारा गले लगाने का अभिप्राय यही है कि बिना किसी प्रसास के उसकी कीर्ति और यश इतना ज्यादा फैल जाता है कि बड़े -बड़े ऋषि-मुनि भी उसका वर्णन नहीं कर सकते हैं।

जब हम सत्य के मार्ग पर चलना प्रारंभ करते हैं, तो मन में यह दुविधा उठना स्वाभाविक है । कि धन-सम्पत्ति और यश-कीर्ति का क्या होगा? यह दुविधा न केवल साधक के मन

में होती है, बल्कि उसे सम्बन्धित अन्य लोगों के मन में भी होती है। इसलिए उसे आगे बढ़ने से रोका भी जाता है। यहाँ श्री तुलसीदास जी इस दुविधा को दूर करने का बहुत सार्थक प्रसास कर रहे हैं। विवेकशील व्यक्ति इसे आसानी से समझ सकता है। जब हम किसी उच्च पद को प्राप्त करते हैं तो छोटे पदों की अहमियत उसके लिए समाप्त हो जाती है। इसी तरह जब हम अनन्त को पा लेते हैं तो सांत या सीमित उसमें स्वाभाविक रूप से सम्मिलित रहते ही हैं। जिसने परमात्मा को पा लिया उसके लिए तो सांसारिक उपलब्धियाँ बहुत तुच्छ हो जाती हैं।

जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते।
कब कोबिद कहि सके कहाँ ते ।।15।।
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा।
राम मिलाय राज पद दीन्हा ।।16।।

ईश्वरीय अनुभूति के आनन्द में मग्न व्यक्ति की स्थिति का वर्णन तो यम, कुबेर, दिशाओं के देवता, विद्वान आदि भी नहीं कर सकते। श्री हनुमान जी जी तो संत हैं और इसीलिए वे श्री राम के प्रिय हैं। संत की यही विशेषता होती है कि वे अपने सम्पर्क में आने वाले जीवों का स्वाभाविक रूप से सहज ही उद्धार कर देते हैं। संत पारस होते हैं और उनके स्पर्श से लोहे की तरह जीव भी संत बन जाते हैं। सुग्रीव वास्तव में जीव का प्रतीक हैं और श्री हनुमान जी संत हैं। उन्होंने उसे श्री राम से मिलाकर उसका उद्धार कर दिया। इसका तात्पर्य है कि श्री हनुमान जी की कृपा से हमारा भी उद्धार हो सकता है।

तुम्हरो मन्त्र बिभीषण माना।
लंकेश्वर भए सब जग जाना ।।17।।
जुग सहस्त्र जोजन पर भानु।
लील्यो ताहि मधुर फल जानू ।।18।।

संत की वाणी में इतना प्रभाव होता है कि वह मनुष्य का कल्याण कर देती है। जब श्री हनुमान जी विभीषण जी से मिले तो उन्हें प्रभु श्री राम की शरण में जाने की सलाह दी। प्रभु श्री राम की शरण में आने से विभीषण जी को परम आनंद तो मिला साथ में भौतिक उपलब्धि भी राज्य के रूप में प्राप्त हुई। तात्पर्य यह है कि श्री हनुमान जी की स्तुति करने से हमारा हर प्रकार से कल्याण होता है।

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं।
जलधि लांधि गये अचरज नाहीं ।।19।।
दुर्गम काज जगत के जेते।
सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ।।20।।

शांतिमयी सीता जी की खोज में श्री हनुमान जी द्वारा समुद्र लांघना वास्तव में मनुष्य जीवन की सम्पूर्ण अध्यात्मिक यात्रा है। यह समुद्र कुछ और नहीं, भवसागर है जिसमें भावनाओं या इच्छाओं की लहरें सतत उठती रहती हैं। इसे पार करने में अपनों की सहानुभूति या राग मैनाक पर्वत की तरह अनुकूल बाधा है तथा सत्त्व गुण की प्रतीक सुरसा, तमोगुण की प्रतीक सिंधिका तथा रजोगुण की प्रतीक लंकनी प्रतिकूल बाधायें हैं। भवसागर पार करने के लिए सत्व गुण को बढ़ाना चाहिये, तमोगुण को नष्ट करना तथा रजोगुण को परिमार्जित करना चाहिये। इस कठिन कार्य को करने के लिए श्री हनुमान जी स्वयं अपने उदाहरण से बहुत ही सार्थक और प्रभावशाली उपाय बताते हैं- ''**प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं**''। यह '**नाम जप**' की महिमा है। सतत नाम स्मरण करने से मन शुद्ध, शांत और एकाग्र होता है। नाम स्मरण के द्वारा अत्यंत कठिन भव सागर सहजता से पार किया जा सकता है।

यहाँ जलधि का अभिप्राय भवसागर है। जब हम सकाम कर्म अर्थात् इच्छाओं से प्रेरित होकर स्वार्थ हेतु कर्म करते हैं तो पुरानी वासनायें क्षय होती हैं, किन्तु फिर से नई वासनायें बन जाती हैं। इस तरह हमने अपने अनेकों जन्मों में जो वासनायें एकत्र की हैं, उनका भंडार ही भव सागर है। निष्काम कर्म अर्थात् कर्मयोग में पूर्व वासनायें तो क्षय हो जाती हैं किन्तु नई वासनायें नहीं बनतीं। जब धीरे-धीरे वासनायें क्षय होती है तो मन भी शांत और शुद्ध हो जाता है। कर्मयोग ईश्वर के लिए समर्पण भाव से कर्म करने की प्रक्रिया है। श्री हनुमान जी इसके साक्षात् उदाहरण हैं। उनका अनुसरण कर हम भी भव सागर पार कर सकते हैं।

क्रमशः

PROPRIETOR-ROHIT DAVE

BUDHRAJA SPORTS MUSICAL CO.

Dealers Retailers Wholesalers

Deals in: All kinds of Sports Goods

Authorized Dealer

SG NIVIA SF GM GKI® HEAD

VECTOR X SS LI-NING DONIC

Budhraja Sports & Musical Co.

Shop No.52, 'A' Market, Sector-6, Bhilai Chhatishgarh

Mobile : +91-9406328039 Phone:+91-788-2275125

Email :budhraja.sports@gmail.com

निधन समाचार समाज की ओर से सभी दिवगंतों को सादर श्रद्धांजलि

क्र.	नाम	स्थान	दिनांक
1.	श्रीमती तारा कृष्णकुमार दवे	जबलपुर	31.05.2025
2.	श्रीमती शशिकला रमाकान्त दवे	रायपुर	01.06.2025
3.	श्रीमती मुक्ता डॉ. रमाशंकर त्रिवेदी	हटा	06.06.2025
4.	श्रीमती पुष्पा आनंदशंकर मेहता	बिलासपुर	13.06.2025
5.	डॉ. राजीव प्रभाशंकर त्रिवेदी	जबलपुर	14.06.2025
6.	श्रीमती अनुराधा मधुसूदन जोशी	मुंबई	24.06.2025
7.	श्रीमती अनुजा पराग मेहता	भोपाल	26.06.2025
8.	श्री कृष्णकांत नारायणशंकर भट्ट	भिलाई	05.07.2025
9.	श्री राजीव उमाशंकर पंड्या	वाराणसी	15.07.2025
10.	श्रीमती विजया पंड्या	रायपुर	16.07.2025
11.	श्री विकास शिवशंकर भट्ट	भोपाल	31.07.2025
12.	श्रीमती संगीता प्रवीण पंड्या	दमोह	12.08.2025

सूचना

बाज खेड़ावाल दर्शन त्रैमासिक पत्रिका में बधाई संदेश, युवा परिचय-ग्रह (कुण्डली), व्यवसायिक विज्ञापन, श्रद्धांजली-पुण्य स्मरण के विज्ञापन मुख्य संपादक श्री सुधीर पंड्या, के पते पर या मो. नं. (व्हाट्सएप नं.) 9826676077 पर भेजें।

- पत्रिका स्पॉन्सरशिप-15000/-
- (एक कलर व दो ब्लेक/ व्हाइट पेज फ्री, प्रत्येक पेज पर नीचे नाम पट्टिका)
- फुल कलर पेज 5000/- हाफ पेज 2500/-
- फुल ब्लैक एंड व्हाइट पेज 1000/-हाफ पेज 500/-

संगठन को मजबूत बनाने एवं अपनी सक्रिय भागीदारी के लिये संस्था के आजीवन सदस्य बनें एवं शिक्षा फंड, पत्रिका फंड, मेडिकल फंड में दान देकर सहयोग करें। आजीवन सदस्यता शुल्क 3000/- पति/पत्नि के साथ संयुक्त सदस्यता शुल्क 5000/- (आजीवन सदस्य को ही पत्रिका प्रेषित की जाती है।) आजीवन सदस्य के पते में परिवर्तन की सूचना अवश्य दें ताकि पत्रिका समय पर सही पते पर प्रेषित की जाये।

आजीवन सदस्यता, पत्रिका, शिक्षा फंड में दान हेतु खातों का विवरण -

नामे - मध्य क्षेत्रीय गुजराती बाज खेड़ावाल समाज

आजीवन सदस्यता फंड - 1247206719,

शिक्षा फंड - 1247205557,

पत्रिका फंड -1247206731,

मेडिकल सहायता फंड-3117342158,

शांतिधाम फंड-3231723403

सेंट्रल बैंक ऑफ इण्डिया, विजय नगर,

जबलपुर (म.प्र.)

IFSC CODE-CBIN 0283689

अशोक धगट (कोषपाल)

मोबा. 9424310759

गुजराती बाज खेडावाल ब्राह्मण समाज

79वां
स्वतंत्रता दिवस

॥गणेश चतुर्थी॥

नर्मदापुरम

पं राजकुमार तिवारी

श्रीमती मोनिका दुबे

पं हर्ष तिवारी

पं अशोक दुबे

पं सौरभ तिवारी

पं बीएम भट्ट

पं. आलोक दुबे

पुष्पा जोशी

पं विशाल दुबे

पं संदीप दुबे

डा सिंधुचरण दुबे

श्रीमती स्वाति दुबे

पं ओपी तिवारी

श्रीमती पूजा भट्ट

पं संतोष जोशी

पं ओपी तिवारी

समाज की गौरव - कर्नल मेघना दवे

आपरेशन सिन्दूर के बाद देश की सुप्रतिष्ठित 'फेमिना' पत्रिका के अगस्त 2025 के अंक में कवर पृष्ठ पर सेना में जांबाज महिलाओं के योगदान पर केन्द्रित सेना की यूनिफार्म में एक आकर्षक-रंगीन ग्रुप फोटोग्राफ प्रकाशित हुआ है। देश के स्वाभीमान को बढ़ाती इन सैन्य महिलाओं के इस फोटोग्राफ में हमारे समाज की बेटी **कर्नल मेघना दवे** भी दिख रही हैं, देश की इस प्रतिष्ठित पत्रिका के कवर पृष्ठ में उनकी फोटो का प्रकाशन हमारे समाज के लिए गौरव की बात है, इसके लिए उन्हें समाज की ओर से बधाई।

उल्लेखनीय है कि टाइम्स ऑफ इंडिया ग्रुप की फेमिना पत्रिका 1959 से प्रकाशित हो रही है। पत्रिका में केवल महिलाओं के विविध महत्त्वपूर्ण विषयों की सामग्री का प्रकाशन किया जाता है। महिलाओं की गतिविधियों पर केन्द्रित यह देश की एक लोकप्रिय पत्रिका है। ऑपरेशन सिन्दूर के बाद सेना में महिलाओं के योगदान में महिला सशक्तिकरण की एक नई मिसाल कायम की है। देश को उनकी बहादुरी पर अटूट विश्वास कायम हुआ है। पत्रिका के अंदरूनी पृष्ठों में इन महिला सैन्य अधिकारियों/कर्मियों की विस्तृत जानकारी भी प्रकाशित की गई है।

कर्नल मेघना दवे स्वर्गीय मेजर वीरेश दवे एवं श्रीमती मंजुला दवे की सुपुत्री हैं।

साभार उद्धृत

सम्पादक

सूचना

कृपया प्रकाशन हेतु टाइप कराकर या हस्तलिखित सुस्पष्ट सामग्री भेजें ताकि त्रुटि की सम्भावनाएँ कम रहें।

बाज खेड़ावाल दर्शन में प्रकाशित लेख/जानकारी पूर्वाग्रह रहित छापे जाते हैं। लेखकों के स्वयं के विचार लेख में प्रकट होते हैं। इसे पाठक स्वयं से न जोड़ें, संगठन एवं पत्रिका के पदाधिकारी इसके लिए जवाबदेह नहीं हैं। जो पत्रिकाएँ किसी कारणवश वापिस लौटती हैं उनकी जानकारी M.K.G. बाज खेड़ावाल कार्यकारिणी व्हाट्सएप ग्रुप में सूचित कर और इस तरह से सही पतों की जानकारी प्राप्त कर उन्हें पुनः भेजी जाती हैं। इसके अतिरिक्त जिनको पत्रिका नहीं मिलती है वे संबंधित पोस्ट ऑफिस से संपर्क करें व हमें भी सूचित करें।

– सम्पादक मंडल

पत्रिका में प्रकाशन हेतु सहयोग राशि

ब्लेक एंड व्हाइट - प्रति पृष्ठ 1000/-, आधा पृष्ठ 500/-

कलर पेज - प्रति पृष्ठ - 5000/-, आधा पृष्ठ - 2500/-

कवर इनर कलर पेज फुल - 20,000/- कवर इनर कलर पेज हॉफ- 10,000/-

बैंक के चैक/ड्राफ्ट एवं प्रकाशन सामग्री भेजने हेतु पता...

श्री सुधीर पंड्या – सचिव

'खेटकब्रह्म' 577, आनंद कालोनी, बल्देवबाग, जबलपुर (म.प्र.)
पिन-482002, मो./व्हाट्सएप नं. 9826676077

Registered with Registrar of News Paper,
Govt. of India, New Delhi.
Registration No. MPMUL/2011/38970
PERIODICAL PRINTED MATTER

आ.स. क्रमांक –

प्रति,

श्री/श्रीमती ____________________

____

____

____

If not delivered please return to

Shailendra Dhagat
(JOINT-SECRETARY)
G-79, Rameswaram Colony, Vijay Nagar,
Jabalpur (M.P.)- 482002, MOB. NO. 9425386933

त्रैमासिक प्रकाशन - प्रकाशक - मुद्रक - प्रकाशन स्थान - मध्य क्षेत्रीय गुजराती बाज खेड़ावाल समाज, जबलपुर (म.प्र.) के लिए अनिमेश पंड्या द्वारा अनिल मुद्रणालय, 1521, होम साइंस कॉलेज रोड, नेपियर टाउन, जबलपुर से मुद्रित एवं बाज खेड़ावाल गुजराती भवन, 135 संगम कॉलोनी, बल्देवबाग, जबलपुर (म.प्र.) से प्रकाशित